LITERATURE IN HINDI

Study material

THIRD SEMESTER BA/BSc

COMMON COURSE (HINDI)

(2011 Admission)

UNIVERSITY OF CALICUT

SCHOOL OF DISTANCE EDUCATION

CALICUT UNIVERSITY P.O. MALAPPURAM, KERALA, INDIA - 673 635

117

UNIVERSITY OF CALICUT

SCHOOL OF DISTANCE EDUCATION

Study material

COMMON COURSE in HINDI

For THIRD SEMESTER BA/BSc

LITERATURE IN HINDI

Prepared by

Dr. Sujith. N. Thampi
Thanal(h)
Iringattiri(p.o)
Karuvarakundu(via)
Malappuram(dist)
Pin: 676523

Scrutinised by :

Dr.Pavoor Sasheendran,
38/1294, 'Appughar",
Edakkad, Calicut-5.

©
Reserved

१. आधुनिक गद्य विविधा - संपादक ईश्वरचन्द्र

UNITS

१. हिंदी गद्य का उद्‌भव और विकास

२. रीढ की हड्‌डी (एकाँकी) - जगदीशचन्द्र माथुर

३. घीसा (संस्मरण) - महादेवी वर्मा

४. बचपन (आत्मकथा) - हरिवंशराय बच्चन

५. ठेले पर हिमालय (यात्रा वर्णन) - धर्मवीर भारती

६. इलाहाबाद (फीचर) - बटरोही

२. काव्य सुमन - संपादक महेन्द्र कुलश्रेष्ठ

१. हिंदी कविता का उद्‌भव और विकास

२. साखी - कबीरदास

३. बाल लीला - सूरदास

४. भिक्षुक - सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

५. ताज - सुमित्रानंदन पंत

६. नाच - 'अज्ञेय'

७. एकलव्य - कीर्ति चौधरी

८. मतदाता - 'धूमिल'

९. मुक्ति - अरुण कमल

१०. शोक गीत - कात्यायनी

११. विज्ञापन सुंदरी - लीलाधर जगूडी

१२. तीली - उदयप्रकाश

१३. स्त्रियाँ - अनामिका

३ कालजयी हिन्दी कहानियाँ सं : रेखा सेठी, रेखा उप्रेती

१. हिन्दी कहानी का उद्भव और विकास

२. कफन - प्रेमचंद

३. वापसी – ममता कालिया

४. चीफ की दावत – भीष्म साहनी

५. उमस – ममता कालिया

६. अपराध – उदयप्रकाश

१. हिंदी गद्य का उद्‌भव और विकास

हिंदी गद्य का क्रमबद्ध इतिहास उन्नीसवीं सदी से शुरू होता है। लेकिन इससे कई सदी पूर्व ही इसकी परंपरा का सूत्रपाद हो चुका था। इस संदर्भ में हिंदी गद्य को आगे बढाने वाले लेखक हैं मुंशी सदा सुखलाल, इंशा अल्ला खां, लल्लू लाल और सदल मिश्र। फॉर्ट विलियम कालेज और ईसाई मिशनरियों का योगदान भी महत्वपूर्ण है। उसके बाद काशी के राजा शिवप्रसाद सितारे हिंद और आगरा के राजा लक्ष्मण सिंह ने हिंदी गद्य के उन्नयन में योग दिया। हिंदी गद्य के प्रसार में शिक्षा संस्थाओं, कचहरियों और पत्र - पत्रिकाओं का भी योगदान रहा है। फिर भी हिंदी गद्य को एक व्यवस्थित स्वरूप नहीं मिल पाया था।

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (1850 - 1885 ई) ने अपने अल्प जीवन-काल में ही हिंदी गद्य के क्षेत्र में अद्‌भुत कार्य किया। एक ओर उन्होंने गद्य-शैली को परिमार्जित एवं परिष्कृत करते हुए उसका मार्ग निश्चित किया तो दूसरी ओर उन्होंने निबन्थ, नाटक, इतिहास, आलोचना, संस्मरण, यात्रा-विवरण आदि गद्य रूपों की परंपरा का प्रवर्तन किया। प्रताप नारायण मिश्र, बालकृष्ण भट्‌ट, श्रीनिवासदास, किशोरीलाल गोस्वामी आदि इस काल के उल्लेखनीय लेखक हैं।

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी (1864-1938) ने हिंदी गद्य को परिष्कृत सुसंस्कृत और व्याकरण-संगत बनाया। 'सरस्वती' (1900 ई) पत्रिका के संपादक के रूप में अपने युग के साहित्यकारों का नेतृत्व किया। डॉ.श्यामसुन्दर दास, बालमुकुन्द गुप्त, चन्द्रधरशर्मा गुलेरी, अयोध्यासिंह उपाध्याय, गोपालराम गहमरी, मिश्रबन्धु, कामदा प्रसाद गुरू आदि इस युग के स्मरणीय नाम हें।

1920ई के बाद परिमार्जित हिंदी-गद्य में गहनता, विशालता एवं प्रौढता का समावेश हुआ। विश्व विद्यालयों में हिंदी ने प्रवेश पा लिया। 1936 ई के बाद प्रगतिशील लेखक संघ के जन्म के साथ हिंदी-गद्य में पुनःपरिवर्तन हुआ। स्वातंत्र्योत्तर काल में पुनःहिंदी को राष्ट्र भाषा घोषित किए जाने के उपरान्त इस का प्रसार खूब बढा। अनेक अहिंदी-भाषी लेखक भी हिंदी में लिखने लगे। इससे गद्य के रूप में विविधता दिखाई देने लगी।बदलती परिवेश में नई उषा और नई दिशा की खोज करते हुए आगे बढनेवाली हिंदी भाषा और उस के साहित्य का भविष्य निश्चय ही उज्ज्वल है।

२.रीढ़ की हड्‌डी (एकाँकी) - जगदीशचन्द्र माथुर

१. एकाँकी

हिंदी एकाँकी का प्रादुर्भाव जयशंगर प्रसाद के 'एक घूँट' (1930 ई) से माना जाता है। एकाँकीकार एकाँकी के लघु कथानक में कभी द्वन्द्व के माध्यम से और कभी रहस्य तथा कौतूहल के माध्यम से वेगयुक्त तीव्र प्रभाव उत्पन्न करता है। आधुनिक युग की परिस्थिति ने, जीवन को दिशा-दृष्टि और समय-सूझ ने अनेकाँकी के स्थान पर एकाँकी के विकास की, स्थिति को प्रसन्नता से अपनाया है। अंक में एक होना ही नहीं रूपविधान, उद्देश्य, कथ्य, और शिल्पगत विशिष्टताओं के कारण एकाँकी स्वतन्त्र विधा के रूप में प्रतिष्ठित हुई है। आकाशवाणी, दूरदर्शन, शिक्षा संसथाओं के रंगमंचों, जनता के रंगमंचों, नुक्कड नाटकों से इस विधा को और सफलता मिली है। डॉ. रामकुमार वर्मा, भुवनेश्वर प्रसाद, उदयशंकर भट्‌ट, उपेंन्द्र नाथ अश्क, जगदीशचन्द्र माथुर, लक्ष्मीनारायण लाल, मोहन राकेश, धर्मवीर भारती, सुरेंन्द्र वर्मा, विनोद रस्तोगी आदि प्रतिभायें हिंदी एकाँकी को संपन्न बनाया है।

२. लेखक परिचय

हिंदी एकाँकी को समृद्ध बनाने में जगदीशचन्द्र माथुर ने महत्वपूर्ण योग दिए है। अपने अधिकांश सामाजिक नाटक लिखे हैं और उनमें समाज की विभिन्न समस्याओं पर व्यंग्य कसे हैं। आप का प्रथम एकाँकी 'मेरी बासुरी' सन् 1936 में प्रकाशित हुआ था। भोर का तारा तथा ओ मेरे सपने आपके प्रसिद्ध एकाँकी-संग्रह है। उनकी रचनाओं में विचार, अनुभूति, प्रचार और कला तथा ज्ञान और मनोरंजन, दोनों का सुन्दर समन्वय उपलब्ध होता है।

३. शब्दों का अर्थ

अधेड	-	മധ്യവയസ്കൻ
अकल बँट देना	-	ബുദ്ധി പണയം വയ്ക്കുക
बिछना	-	വിരിക്കുക, to be spread out
पसीना	-	വിയർപ്പ്
कसरत	-	അഭ്യാസം
कलस	-	വലിയ പാത്രം
लोटा	-	കപ്പ്
चद्दर	-	പുതപ്പ്
धोबी	-	അലക്കുകാരൻ
मेजपोश	-	മേശവിരി
झाडन	-	ചൂല്
गुलदस्ते	-	flower vase
डाट	-	കോർക്ക്
लाडली बेटी	-	പുന്നാര മോൾ
मुँहपुलाना	-	മുഖം വീർപ്പിക്കുക
जंजाल	-	trouble, misfortune
नफरत	-	വെറുപ്പ്, hatred, contempt
कारबार	-	വ്യവസായം
जिक्र	-	പരാമർശം, narration
मर्जी	-	ഇഷ്ടം
मक्कन	-	വെണ്ണ, butter
नखर	-	നാണം
दकियानूसी	-	പഴഞ്ചൻ, obscurantist
दस्तक	-	മുട്ടൽ
खिसियाहट-भरी	-	നാണം കുണുങ്ങി
झुकी कमर	-	വളഞ്ഞ നട്ടെല്ല്
खासियत	-	സവിശേഷത

बेंत	-	ചൂരൽ, cane
तकलीफ	-	ബുദ്ധിമുട്ട്
मेहरबानी	-	കൃപ, kindness
कचौडियाँ	-	പലഹാരങ്ങൾ
ताकत	-	ശക്തി
वगैरह	-	മുതലായ, etc
मजाल	-	അത്ഭുതം
तश्तरी	-	a small plate
रस्म	-	ചടങ്ങ്
कसाई	-	a butcher
ताक-झाँकना	-	casting of stealthy
छडी	-	walking stick

४. कथावस्तु

विख्यात लेखक जगदीशचन्द्र माथुर की एक सामाजिक एकाँकी है रीढ की हड्डी। अन्धविश्वासों और पूर्वग्रहों में जकडे हुए समाज में नारी के साथ किए जाने वाले अन्याय का मार्मिक चित्रण इस एकाँकी में किया गया है।

गोपाल प्रसाद और रामस्वरूप के बीच शंकर और उमा के विवाह के बारे में बातें होता है। लडकी देखने केलिए बाप-बेटा आनेवाले दिन रामस्वरूप और प्रेमा घर में सब इंतज़ाम करने में व्यस्त है। सभी चीज़ें करीने से रखी जाती है।

सीधी-सादी सरल चरित्र की लडकी उमा कालेज में बी.ए. पढती थी। रामस्वरूप किन्तु अपनी बेटी की शिक्षा संबंधी बातें छिपाकर रखता है। क्योंकि शंकर के पिता गोपाल प्रसाद को केवल मेट्रिक तक पढी हुई लडकी ही अपने बेटे केलिए आवश्यक है। लडकों की पढाई और लडकियों की पढाई को वे एक बात नहीं समझते है। मोर के पंख होते है, मोरनी के नहीं; शेर के बाल होते है, शेरनी के नहीं। इसी प्रकार पुरुष को ही शिक्षा शोभा देती है स्त्री को नहीं। ग्रहस्थी करनेवाली औरतें अंग्रेज़ी अखबार पढना, पालिटिक्स आदी में बहस करना आदि वे अनुचित समझते है। उमा को आधुनिक फेशन से कोई तात्पर्य नहीं है। उमा की माँ प्रेमा उसे पौडर आदि डालने को कहती है। किन्तु उमा को आधुनिक फेशन से कोई तात्पर्य नहीं था। किन्तु थोडा सा हारमोनियम बजाना जानती है।

शंकर और गोपाल का स्वागत होता है। उनके बीच में इधर-उधर की बातें होती है। चाय पीते है। उमा पान की तशतरी लेकर आती है। उमा चश्मा पहनी हुई है। चश्मा देखकर गोपाल प्रसाद को शंका होती है कि लडकी ज़्यादा पढी-लिखी तो नहीं है। शंकर सिर नीचा करके बैठा है।गोपाल प्रसाद के माँग के अनुसार उमा सिर उठाती है। मीरा का प्रसिद्ध गीत गाने लगती है। तब उसके स्वर में तल्लीनता आ

जाती है। तब उसका मस्तक उठा जता है और उसकी आँखें शंकर की झोंपती सी आँखों से मिल जाती है। गाते-गाते एकदम रुकजाता है। गोपाल प्रसाद पूछने लगता है कि क्या उमा पेटिंग जानती है, सिलाई जानती है, क्या कुछ इनाम आदि मिली है। उमा कोई जवाब नहीं देती। विवश होकर उमा मूँह खोलती है 'जन कुर्सी-मेज़ बिकती है, तब दूकानदार कुर्सी-मेज़ से कुछ नहीं पूछता, सिर्फ खरीदार को दिखला देता है'। उमाकी बातें सुनकर सब चौंक जाते है। आगेउमा पूछती है ये जो महाशय मेरे खरीदार बनकर आए है, इनसे ज़रा पूछिए कि क्या लडकियों के दिल नहीं होता ? क्या उनके चोट नहीं लगती ? क्या वे बेबस भेड-बकरियाँ है, जिन्हें कसाई आच्छी तरह देख-भालकर खरीदते है ?

आखिर वह शंकर के बारे में हने लगती है कि यह महाशय पिछली फरवरी में लडकियों के हॉस्टल के ईद-गिर्द क्यों घुमाता फिरता था और वहाँसे भगाया गया था और नौकरानी के पैरों पडकर अपना मूँह छिपाकर भागा गया था। उमा ने स्पष्ट किया कि वह कालेज में पढी है और बी.ए. पास किया है। कोई पाप नहीं किया, कोई चोरी नहीं की, और न आपके पुत्र की तरह ताक-झांक कर कायरता दिखाई। मुझे अपनी इज़्ज़त-अपने मान का खयाल है।

गोपाल प्रसाद गुस्से होकर रामस्वरूप से कहता है कि आप ने मेरा अपमान किया। तब उमा कहती है कि ज़रा घर जाकर पता लगाइए कि आप के लाडले बेटे के रीढ की हड्डी भी है या नहीं-यानी बैकबोन ! गोपाल प्रसाद गुस्से से दाँत पीसकर शंकर को लेकर वापस चला जाता है।

रामस्वरूप और गोपाल प्रसाद के समय में लडकियों को शिक्षा देना अच्छा नहीं समझते थे। लडकियों को घ र बिठाना ही उचित समझते थे। किनतु रामस्वरूप अपनी बेटी उमा को बी.ए. तक पठाती है। पर विवाह के अवसर पर उसको पढाई की बात छिपा कर रखनी पडी। गोपाल प्रसाद जैसे आदमी शादी को 'बिज़नेस' की बात समझता है। उमा इस मनोभाव की आलोचना करती है। जिस प्रकार नारी के प्रति इतनी सूक्ष्म निरीक्षण करने वाले पुरुषकेंन्द्रित निरीक्षण नीति इस समाज में चलते है ठीक उसी प्रकार किसी ने भी पुरुष के प्रति उतना सूक्ष्म निरीक्षण एवं उसकी कमियों को देखने को नहीं पसंद करते हैं। इस अनीती की खिलाफ करते हुए उमा गोपाल प्रसाद के बेटे शंकर की हीन प्रवृत्ति का पर्दाफाश करता है। एकाँकीकार ने मध्यवर्गीय परिवार के जीवन के कुव्यवस्थाओं पर कटु आलोचना की है।

५. प्रश्न

१. 'रीढ की हड्डी' एकाँकी का संदेश क्या है ?

२. 'रीढ की हड्डी' एकाँकी की सामाजिक समस्यायें क्या-क्या है ?

३. देवीप्रसाद की राय में बहु की योग्यतायें क्या-क्या है ?

४. रामस्वरूप अपनी बेटी की पढाई देवीप्रसाद से क्यों छिपाकर रखता है ?

५. लडकियों के हॉस्टल से संबन्दी शंकर की बातें क्या -क्या थीं ?

६. 'जब कुर्सी-मेज़ बिकती है, तब दूकानदार कुर्सी-मेज़ से कुछ नहीं पूछता, सिर्फ खरीदार को दिखला देता है ' उमा का इस कथन का संदर्भ स्पष्ट कीजिए।

७. 'धर जाकर ज़रा यह पता लगाइए कि आप के लाडले बेटे के रीढ की हड्डी भी है या नहीं ' उमा का इस कथन का संदर्भ स्पष्ट कीजिए।

३. घीसा (संस्मरण)

- महादेवी वर्मा

१. संस्मरण

संस्मरण शब्द का अर्थ है सम्यक स्मरण। यह स्मरण व्यक्ति, घटना दृश्य आदि किसी का भी हो सकता है। संस्मरण केवल उसी व्यक्ति, घटना, आदि पर लिखा जा सकता है जिसके साथ लेखक का व्यक्तिगत संबध रहा है। इसमें कहानी, व्यंग्य-विनोद, वर्णन-विवरण, रेखाचित्र आदि का संमिश्रण रहता है। सूक्ष्म विश्लेषण, सजीव चित्रम-शक्ति, सहानुभूतिपूर्ण हृदय तथा सहज स्वाभाविकता संस्मरण के आवश्यक गुण है। पत्र- पत्रिकाओं का माध्यम से संस्मरण का प्रयोग आरंभ हुआ। आधुनिक काल के गद्य के निर्माता भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के समय से ही संस्मरण की विधा का सूत्रपात दिखलाई देता है। आगे चलकर सरस्वती, चांद, हंस, इन्दु, विशाल भारत आदि पत्रों के माध्यम से संस्मरण-साहित्य प्रकाश में आया। संस्मरण-साहित्य का सब से समृद्ध युग छायावादोत्तर युग है। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी, रामकुमार खेमका, जगन्नाथ खन्ना, रामनारायण मिश्र, वृन्दावनलाल वर्मा, श्रीराम शर्मा, रामवृक्ष बेनीपुरी, उपेन्द्रनाथ अश्क, रामधारी सिंह दिनकर, अज्ञेय, मोहन राकेश, हरिवंशराय बच्चन, सुरेश सेठ, कमलेश्कर, तनसुखराम गुप्त आदि उल्लेखनीय संस्मरणकार है। हिंदी का संस्मरण-साहित्य अपने विविध रंगों और साज-सज्जाओं में समृद्ध होता जा रहा है।

२. लेखिका परिचय

हिंदी साहित्य के इतिहास में अपनी कविता ही नहीं अपितु संस्मरणों, यात्रावृत्तों तथा निबन्धों केलिए भी प्रख्यात महादेवी वर्मा का जन्म सन् १९०७ में उत्तर प्रदेश के फरूखाबाद में हुआ। 'आधुनिक मीरा' नाम से विख्यात उनकी काव्य कृति 'यामा' को ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला है। संस्मरणों में उनके सहज संवेदन शील मन की अमिट छाप देखने को मिलती है। 'अतीत के चलचित्र ' तथा 'स्मृति की रेखाएँ ' में समाज-पीडित व्यक्तियों का करुणा गाथा है, 'पथ के साथी' में अपने समय के साहित्यकारों के रसभीने स्मृति-चित्र में तो 'मेरा परिवार' में महादेवी जी द्वारा पाले गए पशु- पक्षियों का मार्मिक अंकन है। इस रचनाओं का मूल गुण है भावुकता, चित्रात्मकता और संवेदन शीलता। 'घीसा' नामक संस्मरण में सब प्रकार से दीन-हीन, किन्तु स्नेह और कृतज्ञता की मूर्ती एक छोटे बालक का मार्मिक चित्र उपस्थित किया गया है।

३. शब्दों का अर्थ

खंडहर	-	ruins
अवकाश	-	leisure
आमोद-प्रमोद	-	merriment
क्षत-विक्षत	-	മുറിവേറ്റ
पछाड खाना	-	to be dashed down
कर्यकारिणी	-	working committee
निर्वाचन	-	election
पीपल	-	അരയാൽ

एकत्रहोना	-	इकट्ठा होना
कडा	-	വള
नकली	-	artificial
टाँग	-	കാൽ
गोधूलि	-	സന്ധ്യ
गठन	-	structure of the body
सुडौल	-	well built
मटमैला	-	dusty
इतवार	-	sunday
गंजाइश	-	scope
टिकना	-	to stay
कोरी	-	new
बढईगिरी	-	carpentry
सफेदी करना	-	to white wash
हैज़ा	-	cholera
विधुर	-	widower
कदाचित	-	perhaps
अचम्भा	-	surprise
कानाफूसी	-	wispering
अनुपस्थिति	-	absence
समझदारी	-	partnership
खिसक जाना	-	to slip away
किसकिसाना	-	to feel some kind of irritation
कोहरा	-	mist
बिछोह	-	separation
तरबूज	-	water melon
खरासोना	-	pure gold
सोने की मुहर	-	gold coin
जूठी पत्तल	-	എച്ചിലില
पट्टी	-	എഴുത്തുപലക
ढीला	-	അയഞ്ഞ
छाया	-	നിഴൽരൂപം

भावातिरेक	-	വികാരപാരവശ്യം
कोयला	-	കൽക്കരി
छूत की बीमारी	-	പകർച്ചവ്യാധി
धब्बा	-	അടയാളം
डलिया	-	കൂട്ട
दार्शनिक	-	philosopher

4. सारांश

घीसा कर्तव्यपरायण और गुरुभक्त बालक था। वह पितृहीन बालक था जो अपने माँ से संबन्धित अपवाद पूरा नहीं समझ पाया था। गंगा-पार झूंसी नामक गाँव में पीपल के पेड की छाया में अन्य गरीब बालकों के अलावा घीसा भी पढने केलिए लेखिका के पास आता था। घीसा के चरित्र में एक अबोध बालक की सहज स्वाभाविक निष्कलंकता एवं अटूट गुरुभक्ति की एक उज्ज्वल झाँकी मिलती है। एक दिन लेखिका शाम को वापस आने केलिए नाँव में चढते समय एक गरीबिन अपने अर्धनग्न बेटे को भी शिक्षा देने का अनुरोध हावभाव से करने लगा। पीपल के नीचे सबसे पीछे वह 'घीसा' आ बैठा। उसका शरीर सुडौल है। लेकिन कपडा या साहचर्य गरीब था। किन्तु सबकुछ वह पढना चाहता है। उसका पिता जनम के पहले गुजर गया था। सबसे अलग रखने का उपदेश माँ ने दिया था। इसलिए सबके पीछे वह बैठने लगा। माँ ने उसे छुपाकर पाला था। कभी काम पर जाते तो शिशु रेंगते आता था। इसलिए घीसा नाम सार्थक हुआ। लेखिका को केवल उसका नाम मालुम था।

उसका पिता डलिया बनाता था। फिर बढई बन गया। पडोस के गाँव की लडकी को पत्नी बना लाया। काम कर जीने लगा। लेकिन भगवान उसे वापस ले लिया। तब पत्नी गर्भवती थी। वह किसी को नहीं मानती, काम कर जीने लगी। उसके प्रति अफवाद फैलती रही। वह न मानती थी। यहाँ लेखिका को मालुम हुआ कि वह पठने को तत्पर है। आचरण, आदर विशेष का लगा। महादेवी उसे अपनाने तक सोचने लगा। लेकिन उसकी माँ के बारे में सोचकर संयम रही।

शनिवार में घीसा पीपल के नीचे की जगह साफ करता था। अगले दिन भी फिर साफ करता है। मेरे आते वक्त 'गुरु साहब' कह कर सब छात्रों को सचेत करता था। मुझे बैठने केलिए जगह झाड कर तैयार करता था। सभी सामान साफकर मेरे पास रखता था। महीने में चार दिन में वहीं आती थी। और जल्दी आए तो कम दिन आ सकती थी। लेकिन घीसा मेरे मन में सजीव रहता है। एक दिन मैंने सफाई के बारे में बताकर छात्रों को धोकर आने को कहा। सब आधार धोकर आया। घीसा आया ही नहीं। उसे साबुन नहीं था। माँ साबुन खरीद न सकी थी। दूसरे दिन बालक किसी दयावती का दिया हुआ पुराना कुरता पहनकर आया। वह आधा भीगा हुआ था। वह अपराधी के समान लेखिका के सामने खडा हो गया तो लेखिका के मन में सहानुभूति हुई और वे सोचने लगी कि एक गुरू की वाणी का कितना प्रभाव शिष्यों पर पडता है। तब लेखिका को महाभारत के एकलव्य का प्रसंग याद आया और द्रोणाचार्य ने अपने भील शिष्य से अंगूठा कैसे कटवा लिया था, उसका कारण भी लेखिका को अच्छी तरह समझ मों आया।

में ने एक दिन जिलेबी ले आकर सब को दिया। बच्चों ने एक न एक कारण बताकर और माँगे। लेकिन घीसा उनमें नहीं था। कुछ देर बाद वह प्रकट हुआ। दो जिलेबी माँ केलिए सुरक्षित रख दिया, दो स्वयं खाया, अपने कुत्ते को एक ही दे पाया। तो इशारे से कुत्ते को एक और देने का आग्रह प्रकट करता है।

होली के पहले घीसा बीमार हो गया। कुछेक दिन माँ साथ रहे। फिर बुढिया को रखकर वह काम पर गई। इस बीच वहाँ सामुदायिक संघर्ष फूट पडा। दिनों से घीसा मिला नहीं। तो उससे मिलने लेखिका निकली। बीच में वह अटपडे चाल आया। वास्तव में बीमार पडे रहने के बीच उसे प्यास आया था। उठ आते समय सुना था कि संघर्ष उत्पन्न हुआ है। उससे 'गुरु साहब' को वह सुरक्षित कर देने हेतू आता था। लेखिका को वह जाने नहीं देता है। वह कमज़ोर था। तो तरकीब सूझा कि वर्ष भर एक बार देख आने वाले अपने छात्रोंसे मिलने केलिए जाने की आवश्यकता उस ने समझाई। उसे खाट पर लिटाकर लेखिका रवाना हुई।

घीसा सुख हो गया। वह अपना साफ करने का कार्य ज़ारी करने लगा। लेखिका उस गाव का अध्यापन समाप्त करने को है। उनका स्वास्थ्य खराब हुआ। वे विदाई कर रही थी। घीसा तो प्रकट में न आया। लेखिका नाव में रवाना होने वाली थी।तब उनकी आँखों में एक अर्धनग्न रूप दीखने लगा। वह घीसा था। घीसा दौड कर आता था। आधा नंगा था। उसके हाथों एक तरबूजा भी था, अपने गुरू को देने दौड आया था। एक खेतवाले के लडके की नज़र घीसा के नये कुरते पर थी जिसे किसी दयावती ने दान दिया था। घीसा ने अपना कुरता देकर बदले में तरबूज लिया था। उसने लेखिका को बताया कि तरबूज गुरू साहब न ले तो घीसा रात भर रोएगा और छुट्टी भर रोएगा। बालक की हठ के आगे लेखिका निश्चल तथा निरुत्तर हो गई। लेखिका की दृष्टि में उस गंगा-तट पर जैसी गुरुदक्षिणा उन्हें मिली थी वैसी गुरुदक्षिणा किसी शिष्य ने गुरू को आज तक नहीं दी है। उस गुरुदक्षिणा के सामने लेखिका को संसार के सारे आदान-प्रदान निष्प्रभ जान पडे। फिर घीसा के सुख का विशेष प्रबंध कर लेखिका बाहर चली गई और लौटते-लौटते कई महीने लग गए। इस बीच में उसका कोई समाचार न मिला था। जब फिर उस ओर जाने का अवसर लेखिका को मिला तब उसकी मृत्यु हो जाने की बात सुनी तो लेखिका को ऐसा आघात हुआ जिस से मुक्त होना असंभव हो गया। संस्मरण की काव्यात्मक शैली लेखिका की उदात भावना तथा जाग्रत संवेदना पाठक को रससिक्त करने में पूर्ण समर्थ हो गया है।

5. प्रश्न

१. 'घीसा' नाम सार्थक है, क्यों ?

२. घीसा ने अपनी गुरुभक्ति का परिचय कैसे दिया ?

३. घीसा के द्वारा दी गई गुरुदक्षिणा पाकर लेखिका क्यों और कैसे प्रभावित हुई ?

४. घीसा के कष्ट सहने की शक्ति का उदाहरण दीजिए।

५. घीसा की समझदारी का परिचय दीजिए।

६. घीसा को उसका कौन-सा कार्य एकलव्य की श्रेणी में रख देता है ?

७. घीसा के चरित्र का परिचय दीजिए।

८. ' उस तट पर किसी गुरू को किसी शिष्य से कभी ऐसी दक्षिणा न मिली होगी,ऐसा मुझे विश्वास नहीं, परन्तु उस दक्षिणा के सामने संसार के अब तक के सारे आदान-प्रदान फीके जान पडे ' संदर्भ स्पष्ट कीजिए।

4. बचपन (आत्मकथा)

- ' हारिवंशराय बच्चन '

1. आत्मकथा

जब कोई व्यक्ति अपनी जीवनी स्वयं लिखता है तब उसे आत्मकथा कहते है। 'आत्मकथा' में कथा शब्द जुडा हुआ है। िस का सीधा सा अर्थ यह है कि इस जीवनी को पढते समय पाठक को वैसा ही आनंद मिलता है जैसा उसे किसी कहानी या उपन्यास पढते समय प्राप्त होता है। लेकिन उपन्यास या कहानी में जहाँ काल्पनिक कथायें होती है वहाँ आत्मकथा में लेखक अपने जीवन मं घडी हुई वास्तविक घटनाओं को ही लिखता है। आत्मकथा लिखना बहुत कठिन काम है क्योंकि इस में लेखक को अपने जीवन का निर्माण करने वाली घटनाओं का सच्चा, निष्कपट और सिलसिलेवार ब्यौरा इस ढंग से लिखना होता है कि पाढक के सामने उसकी सही तसवीर आ सके। सन् 1641 में बनारसीदास जैन द्वारा रचित पद्यात्मक कृति ' अर्ध कथानक ' से हिंदी में इस विधा का प्रारंभ होता है, किनतु गद्य की दृष्टि से प्रथम आत्मकथा स्वामी दयानंद सरस्वती रचित 'स्वकथित आत्मचरित' (1879) है। कालांतर में अनेक कलात्मक और मनोवैज्ञानिक आत्मकथायें लिखी गईं, जिन में स्वाभाविकता, सत्यवादिता तथा निष्कपट आत्मप्रकाशन के गुण विद्यमान है। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, राधाचरण गोस्वामी, भाईपरमानंद, श्यामसुन्दर दास, राहुलसांकृत्यायन, शांतिप्रिय द्विवेदी, नंददुलारे बाजपेयी, यशपाल, चतुरसेना शास्त्री आदि हिंदी के विशेष उल्लेखनीय आत्मकथाकार है।

2. लेखक परिचय

डॉ. हरिवंशराय बच्चन बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं। हिंदी कविता में हालावाद के प्रवर्तक के रूप में उनको ख्याति मिली है। आपने संवाददाता, अध्यापक, प्राध्यापक, राज्यसभा के मनोनीत सदस्य, आकाशवाणी आदि विविध पदों पर कार्य किया। पद्य की भाँति गद्य पर भी आपका पूर्ण प्रभुत्व है। आपकी अनूदित रचनाऐं भी अनेक हैं। उनकी रचनाओं में सहज प्रतीकात्मकता के अतिरिक्त उल्लास और जवानी की मस्ती मिलती है। क्या भूलूँ क्या याद करुँ, नीड का निरमाण फिर, प्रवास की डायरी, दशद्वार से सोपान तक आप की आत्मकथा के चार ग्रन्थ है। 'मेरा बचपन' लेखक की आत्मकथा का एक अंश है। हमारे देश में ज्योतिषि माता-पिता को प्रसन्न करने केलिए ग्रहों में परिवर्तन कर देते हैं और अपना स्वार्थ साध लेते हैं। सरलता बचपन की सबसे बडी नियामत है, जब छूत-अछूत ऊँच-नीच आदि का कोई भेद नहीं होता। लेखक की भाषा-शैली की सरलता और सहजता अत्यंत प्रभावशाली बन गई है।

3. शब्दों का अर्थ

अतीत	-	past
असर	-	effect, influence
नाहक	-	unjustly
परेशान	-	troubled
बाबरहाल	-	നേരേമറിച്ച്
जन्म-पत्र	-	ജാതകം

प्रफुल्ल	-	delighted
ओझाई	-	black magician
सलाह	-	advice
बतासे	-	മധുരപലഹാരം
नाई	-	barber
तुलादान	-	തുലാഭാരം
तराजू	-	a balance
अछूत	-	untouchable
नातेदार	-	relative
जमादार	-	group leader
जड	-	senseless
हितकर	-	beneficial,
दूरगामी	-	ദൂരവ്യാപകമായ
क्रांति	-	revolution

4. सारांश

डॉ. हरिवंशराय बच्चन बचपन का जीवन प्रस्तुत करते हुए कहता है कि मेरा जन्म मूल नक्षत्र में हुआ था। इसलिए लेखक का विश्वास हे की जीवन और सृजन दोनों में कुछ मौलिक करने की ओर मेरा आग्रह रहा है। किन्तु इसमें कुछ गडबडी है। परिवार वाले ऐसी बातों पर विश्वास रखते है। लेखक के पिता भी ज्योतिष में कुछ जानकारी रखते है और उन्हें खुशामत करने केलिए ज्येतिषी ने इस में कुछ परिवरतन लाया और दूसरा जन्म-पत्र की उच्च ग्रह डाल देकर प्रस्तुद किया। इस जन्म-पत्र के आधार पर मेरे भविष्य के बारे में परिवार वाले निर्णय कर लेते थे। माँ और पत्नी तेज़ी इसी नक्षत्र के आधार पर मेरे भविष्य की चिंता-आग्रह कर लेती थी।

लेखक की माता सहज-विश्वासी थी। लेखक के जन्म के पहले उनके मुहल्ले की किसी बडी-बूढी ने उन्हें उपदेश दी थी कि तुम्हारे लडके नहीं जीते तो अब जब लडका हो तो उसे किसी चमारिन के हाथ बेच देना और मन से उसे पराया समझकर पालना है। लेखक पैदा हुआ तो लेखक के माँ ने पाँच पैसे में लेखक को लछमिनियाँ चमारिन के हाथों बेच दिया। लछमिनी का बेटा तो गुजर गया था। वे शात दयालू, और शाम रंग की थी। चम्मा को आगे कोई संतान नहीं हुआ। शायद जब लेखक बोलने लगा होगा तो उन्हें उसे चमारिन अम्मा कहना सिखाया गया होगा और लेखक ने उस लंबे नाम को उच्चारण करने की असमर्थता में उसे संक्षेप कर लिया होगा। लेखक चमारिन को वैसे चम्मा और अपनी माँ को अम्मा कहने लगा।

मेरे जन्म दिन में विशेष पूजा होती थी। ज्योतिषी भी मौजूद थे। टोकरियाँ भरकर रख दी जाती थी। मुझे लात मारना है। जितने धान बाहर आते वे चम्मा का है। शेष महाजनों का है। तब जोर से मारने को चम्मा कहती थी। बडे होते में चम्मा को ज़्यादा मिलने हेतु जोर से मारता था। मेरे भाई मंदिर जाकर तुलादान करते थे। मेरा भी होता था। उसका सामान भिखारियों को देता था।

चम्मा की मृत्यु पर मेरे बचपन में ही हुई थी। उसके घर का जीवन मुझे याद है। आर्यसमाजी होते समय अछत के बारे में मुझे मालुम हुआ। तब बचपन का मेरा जीवन मुझे आदर्श-सा प्रतीत हुआ। प्रीतिभोजन तो दलितों की पंक्ति में बैठकर मैं ने किया। कुछ लोग मेरे बचपन की जीवन को बताकर व्यंग्य करने लगा। अब मैं अपने अलग घर में रहता हूँ। यहाँ मेरे रसोई में अक्सर कोई चमारिन ही खाना बनाती है। यह सब को स्वीकार्य नही था। कोई खाए बिना भी गए थे।

नीच जातावालों से करनेवाली छूआछूत की भवना एकदम निरर्थक है। समाज में उनको अपना यथोचित स्थान तभी मिलेगा जब उनमें शिक्षा का व्यापक प्रचार हो और उनका आर्थिक स्तर ऊपर उठे। इस विकट भावना के बारे में प्रचार अनिवार्य है। नाम के साथ जाति सूचित नहीं करना चाहिए। जाति का खान सरकार के द्वारा हटा देना चाहिए। जल्दी से यह भावना दूर नहीं हो सकती। धीरे से यह संभव हो जाएगा।

5. प्रश्न

1. बच्चन जी के जन्म-पत्र संबन्धी यादें क्या-क्या थीं ?
2. बच्चन जी चमारिन को चम्मा क्यों कहा गया ?
3. आर्यसमाज में लेखक अपने बचपन के बारे में सोचकर क्यों स्वाभिमान का अनुभव करने लगा ?
4. बच्चन जी के अनुसार अच्छूतों मुक्ती केलिए क्या-क्या करना चाहिए ?

5. ठेले पर हिमालय (यात्रा वर्णन)

इ - ' धर्मवीर भारती '

1. यात्रा वर्णन

यात्रा जीवन का ऐसा अनिवार्य क्रम है जिसके बिना किसी प्राणी का कोई काम नहीं चलता। मनुष्य अनादि काल से लगातार चलता आया है। यह यात्रा कभी क्षुधापूर्ति, कभी नए ज्ञान को हासिल करने, कभी अपनी सौन्दर्य-पिपासा को शांत करने तो कभी सांस्कृतिक आदान-प्रदान, राजनीतिक तथा कूटनीतिक कार्य, शिक्षा-प्राप्ति आदि कारणों से होती रही है। अपने अनुभवों को दूसरे को सुनाने की अदम्य लालसा के कारण मनुष्य इन्हें लिपिबद्ध भी करता रहा है। साहित्य के इतिहास में ये लिपिबद्ध रूप ही यात्रा वर्णन कहलाते है। इनमें स्थान विशेष की समूची विशेषतायें जैसे प्राकृतिक सौन्दर्य, रीति-रिवाज़, आचार-विचार, आमोद-प्रमोद आदि संगृहीत होते हैं। यह बात दूसरी है कि किसी एक रचना में ये सारी विशेषताएँ न होकर लेखक की रुचि के अनुरूप स्थान पाती है। यात्रा वर्णन के द्वारा एक ओर जहाँ लेखक की यायावरी प्रवृत्ति, उसका व्यक्तित्व, उसकी जीवन दृष्टि आदि आँतरिक विशिष्टतायें उभरती है वही वर्णन कला, सूक्ष्म निरीक्षण दृष्टि, अभिव्यक्ति की शक्ति, भाषा-अधिकार, शब्द सामर्ध्य और यात्रा वर्णन की शैली शिल्प का विकास भी सामने आता है। हिंदी यात्रा वर्णन का क्रमिक इतिहास भारतेन्दु युग से ही प्रारंभ होता है - यों इससे पूर्व गुसाई जी कृत 'वन-यात्रा', रामसहायदास विरचित 'वन-यात्रा-परिक्रम' आदि कतिपय ऐसे ग्रंथ मिलते है जिनमें सुदूर तीर्थ-स्थानों की यात्रा के संकेत दिए गए हैं। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, बालकृष्ण भट्ट, प्रताप नारायण मिश्र, देवीप्रसाद गुप्त, कन्हैयालाल मिश्र, राहुलसांकृत्यायन, यशपाल, रामवृक्षबेनीपुरी, मोहनराकेश, अज्ञेय, डॉ.नगेन्द्र, अमृतराय आदी हिंदी यात्रा वर्णन के उल्लेखनीय रचनाकार है। युग और भावबोध के परिवर्तन के साथ यात्रा-दृष्टि में भी अन्तर आ जाता है।

2. लेखक परिचय - साहित्य और पत्रकारिता के क्षेत्र में धर्मवीर भरती का विशिष्ट स्थान है। आपने कविता, उपन्यास, नाटक, कहानी, एकाँकी, आलोचना, यात्रा वर्णन आदि सभी विधाओं पर लिखा है। आपकी भाषा में सहज प्रवाह, काव्यात्मकता और चुटीला व्यंग्य देखने को मिलता है। वर्णन शैली वातावरण को सजीव चित्र के रूप में उपस्थित कर देती है। गुनाहों का देवता, सूरज को सातवाँ घोडा, नदी प्यासी थी, बन्द गली का आखिरी मकान, अंधा-युग, कनुप्रिया, ठंडा लोहा, कहानी-अनकहानी तथा ठेले पर हिमालय आप की उल्लेखनीय रचनाएँ हैं। ठेले पर हिमालय आप का यात्रा वर्णन है जिसमें कौसानी की यात्रा को कलात्मक ढंग से चित्रित किया गया है। हिमालय के प्रति लेखक की आत्मिक अनुभूति ने एक सजीव संवेदनात्मक परिवेश प्रदान किया है। वातावरण के चित्रण में जो कलात्मकता और स्वाभाविकता है, वह गद्य-लेखन की एक मूल्यवान निधि बन गई है।

3. शब्दों का अर्थ

ठेले	-	ഉന്തുവ ി
खासा	-	special
दिलचस्प	-	interesting
यकीन	-	വിശ്വാസം
बर्फ	-	മഞ്ഞ്
भाप	-	നീരാവി
बेडौल	-	disproportionate, ugly
बेतुकी	-	absurd
मचलना	-	to be obstinate
पतलून	-	trousers
करतब	-	performance
निगाह	-	കാഴ്ച
घाटी	-	mountain pass
घूँघट	-	a veil
एकटक	-	unblinkingly
अकस्मात्	-	unexpectedly
केसर	-	saffron
करतूत	-	work, action
चौराहा	-	a quadrivial

4. सारांश

'ठेले पर हिमालय' नामक खासा दिलचस्प शीर्षक लेखक को बिलकुल ढूँढना नहीं पडा किन्तु बैठे-बिठाये मिल गया था। अलमोडा के मित्र के साथ लेखक एक पान की दूकान पर खडा था कि ठेले पर बर्फ की सिलें लादे हुए बर्फवाला आया। ठंडी, चिकनी, चमकती बर्फ से भाप उड रही थी। मित्र क्षण भर उस बर्फ को देखते रहे, उठती हुई भाप में खोए रहे और खोए-खोए से ही बोले, 'यही बर्फ तो हिमालय की शोभा है'। और तत्काल यह शीर्षक लेखक के मन में कौंध गया। बर्फ सबों को आकर्षित करने वाली है। दूर से यह

दिखाई देती है। वह दर्शनीय भी है। यात्रा की याद उन्हें सजीव कर देती है। नैनिटाला-रानीगंच-मंझकाली, कोसी आगे टेढे-मेढे रास्ते से कौसानी। मित्र शुक्ल ही मुझे कौसानी की ओर आकर्षित किया है। वहीं पर उससे भेंट हुई।

लेखक के मित्र के साथ एक अपरिचित भी थी। लंबा-दुबला शरीर, पतला सांवला चेहरा, एमिल जोला-सी दाढी, ढीला-ढाला पतलून, कन्धे पर पडी हुई ऊनी जर्किन, बगल में लटकता हुआ जाने थर्मस या कैमरा या बाईनाकुलार। शुक्ल जी ने उन्हें परिचित कराया। वे शहर के मशहूर चित्रकार सेन था। अकादमी से पुरस्कार मिला है। उसी रुपए से घूम कर छुट्टियाँ बिता रहे है। हृदय से वे मीठा था। कौसानी के अतुलित सौन्दर्य के बारे में जो सुना था वह दिखाई नहीं दे रहा। एक मित्र लेखक से कहा था कि कश्मीर के मुकाबले में उन्हें कौसानी ने अधिक मोहा है। गाँधी जी ने यहीं अनासक्तियोग लिखा था और कहा था स्विटज़रलैंट का आभास कौसानी में ही होता है। किन्तु रास्ते में यह सौन्दर्य नहीं देखा पाया और लेखक के चेहरे पर क्षोभ झलक आया। किन्तु जब बस कौसानी में पहुँचा तब लेखक को वहाँ के बिखरा हुआ अपार सौन्दर्य देख कर आश्चर्य हुआ। कौसानी की पर्वतमाला की रंग-बिरंगी घाटी में किन्नर और यक्ष वास करते होंगे। पचासों मील चौडी यह घाटी, हरे मखमली कौसानी कालीनों जैसे खेत, सुन्दर गेरू की शिलाएँ काटकर बने हुए लाल-लाल रास्ते, जिनके किनारे सफेद-सफेद पत्थरों की कतार और इधर-उधर से आकर आपस में उलझ जाने वाली बेले की लडियों-सी नदियाँ। अकस्मात् हम एक दूसरे लोक में चले आए थे। इतना सुकुमार, इतना सुन्दर, इतना सजा हुआ और इतना निष्कलंक-कि लगा इस धरती पर जूते उतार कर पाँव पोंछकर आगे बढना चाहिए। दूर आसमान में विलीन होने वाली धरती। कत्यूर के आगे हिमालय है।

रसोई ने कहा कि दर्जनों दिनों में बर्फ को देखे बिना यात्री वापस गई है। अब बर्फ प्रकट होने की संभावना है। बादल के हटते हिमालय का वह सुन्दर दृश्य प्रकट हुआ। बाईं ओर से शुरू होकर दाईं ओर गहरे शून्य में धाँसती जाती हुई हिम-शिखरों की ऊबड-खाबड रहस्यमई रोमांचक श्रृंखला। मन को शाँत करनेवाला दृश्य। ऋषि-मुनि लोग यहाँ आत्मशांति केलिए आने का कारण विदित हुआ। कितनी, कितनी पुरानी है यह हिमराशि ! जाने किस आदिम काल से यह शाश्वत, अविनाशी हिम इस शिखरों पर जमा हुआ है। कुछ विदेशियों ने इसी लिए हिमलय की इस बर्फ को कहा है-चिरंतन हिम ! सूरज ढल रहा था और सुदूर शिखरों पर दूर, ग्लेशियर, ढाल, घाटियों का क्षीण आभास मिलने लगा था।

चित्रकार सेन ने शीर्षासन कर हिमलय का आवलोकन कर के कहा ' हम हर पर्सपेक्टिव से हिमलय देखूँगा। ओ सब जीनियस लोग शीर का बल खडा होकर दुनिया को देखता है। इसी से मैं भी शीर का बल हिमलय देखता हूँ।' पर्वत शिखरों पर पहूचने को मन करता है। ये सब याद अलमोडा के उस ठेले पर विद्यमान बर्फ को देखने से मेरे मन में साकार हुई है।

5. प्रश्न

1. लेखक को 'ठेले पर हिमालय' शीर्षक कैसे मिला ?
2. चित्रकार सेन का परिचय दीजिए ।
3. कौसानी का दृश्य कैसा था ?
4. लेखक के हिमालय के दर्शन का अनुभव कैसा था ?
5. ' कुछ विदेशियों ने इसीलिए हिमालय की इस बर्फ को कहा है - चिरंतन-हिम ' संदर्भ स्पष्ट कीजिए ।
6. ' हम हर पर्सपेक्टिव से हिमलय देखूँगा।' संदर्भ स्पष्ट कीजिए ।

6. इलाहाबाद (फीचर)

- ' बटरोही '

1. फीचर

पाश्चात्य प्रभाव से आई हुई यह एक नई साहित्य विधा है। यथातथ्य सूचनाओं पर आधारित रचना को फीचर कहा जाता है। हिंदी में इसे रूपक भी कहा जा सकता है। इस में रूपक की भाँति दो कथाएं साथ-साथ चलती है। जिस प्रकार रूपक कथा में प्रस्तुत कथा के अतिरिक्त अन्य अप्रस्तुत कथा भी अन्तर्निहित रहती है, उसी प्रकार फीचर में भी किसी स्थान के वर्णन के साथ-साथ एक अतिरिक्त कथा को भी प्रस्तुत किया जाता है। इस में लेखक का उद्देश्य केवल स्थान का परिचय देना मात्र नहीं होता, किन्तु उसके माध्यम से उस स्थान के व्यक्तित्व को समग्र रूप में उद्‌घाटित करना होता है। रूपक-कथाकाव्य की भाँती फीचर भी पाठक को एक साथ दो रूपों में प्रबावित करता हैं। इसमें सब प्रकार की वास्तविकताओं का नाटकीकृत रूप उपस्थित किया जा सकता है। हिंदी में इस विधा का आरंभ हुए अभी दो-तीन दशक ही हुए हैं। अभी तो पत्र-पत्रिकाओं के स्तंभों के माध्यम से ही कलात्मक फीचर प्रकाशित हो रहे हैं। आशा है शीघ्र ही वह गद्य-विधा हिंदी साहित्य में अपना समुचित स्थान बनालेगी।

२. लेखक परिचय

आधुनिक युवा कहानीकारों में बटरोही का नाम आदर के साथ लिया जाने लगा है। आप प्रमुख रूप से कहानी-लेखक के रूप में प्रसिध है, किन्तु आपने यात्रा-वर्णन, इण्टरव्यू, फीचर जैसी आधुनिक नई गद्य विधाओं पर भी सफलता के साथ लेखनी चलाई है। फीचर हिंदी की नवीनतम साहित्य विधा है और इसके विकास केलिए हिंदी में अभी पर्याप्त अवकाश भी है।

२. शब्दों का अर्थ

शुरुआत	-	beginning
खामोश	-	silentsilet
उजाला	-	brightness
पंजा	-	palm of hand, paw
चीख	-	scream
संगम	-	junction, conflunce of rivers
खोमचा	-	a pedlar's selling basker or large plate
चुस्की	-	sip, suck
अरसा	-	period, duration
गढ़	-	a fort, citadel
धाक	-	renown
जकड	-	grip
सख्ती	-	hardness

ठहराव	-	pavse, settlement, stability
गिद्ध	-	vulture
झुण्ड	-	flock, group
छितराना	-	to be scattered, to be dispersed.
कुंठा	-	frustration
पीतल	-	brass
पिसकर	-	to be powdered
किरायेदार	-	a hirer
अटकना	-	to get stuckup, to be in love
सराय	-	inn, tavern
प्रतियोगिता	-	competition, rivalry
सरायनुमा शहर	-	ആശ്രയം നൽകുന്ന പട്ടണം
कला-संकाय	-	കലാകേന്ദ്രം
थाना	-	police station
सन्नाटा	-	silence
पुल	-	പാലം
चुप्पी	-	മൗനം
बसाया	-	നിർമിച്ച
चिपटे	-	ഉയരം കുറഞ്ഞ
औद्योगीकरण	-	വ്യവസായവത്കരണം
गम	-	ദുഃഖം
नियमित	-	തുടർച്ചയായി
हफ्तावार	-	weekly
फर्ज	-	കർത്തവ്യം
शगल	-	occupation
चौक	-	നാൽക്കവല
मण्डी	-	ചന്ത
घण्डाघर	-	clock tower
बरकरार	-	നിലനിർത്തുക
बुलबुला	-	കുമിളകൾ

4. साराँश

प्रयाग स्टेशन पर लखनऊ एक्सप्रैस की चीख सुनाई पडती है, चौथम लाइन्स में मिलिट्रीवालों का पहला साइरन बजता.... इस प्रकार इलहाबाद में गुलाबी सुबह की शुरुआत होती है। कहा जाता है कि

इलहाबाद भारत का तीर्थ है। इलहाबाद भारत के प्रसिद्ध धार्मिक केन्द्रों में से एक है, उत्तर प्रदेश का प्रमुख शिक्षा केन्द्र हैं और हिंदी का एक प्रमुख स्थान है। बहुत दूर-दूर से लोग यहाँ आते थे। यहाँ के प्रयाग विश्वविद्यालय ने देश को बडे-बडे नेता, नीतिज्ञ और साहित्य-सेवियों को दिए हैं। आज भी यहाँ के प्रमुख केन्द्र सिविल-लाइन्स, चौक, कटरे-कर्नलगंज में लोग आते हैं। यहाँ की सडकों पर वे घूमते हुए बहुत कुछ ढूँढने की कोशिश करते है। तब लेखक को लगता है कि जैसे इस शहर के गौरवमय अतीत ने इन लोगों को जकड लिया है, जैसे दूर से पंख फटफटाता हुआ कोई गिद्ध एक परिक्रमा लगाकर ऊपर ही ऊपर से भागा गया हो, जैसे गहरे काले बादलों का एक झुंड शहर में आते-आते छितरा गया हो।

इलाहाबाद शहर की कहानी भी पतनशील सामंती शहरों की ही तरह बाहर से आए हुए लोगों की कहानी है। नगर के मूल निवासी आज भी है। इलाहाबाद का जो कुछ भी अपना गौरवमय अतीत है, उसका अपना एक व्यक्तित्व है, वह बाहर के लोगों के द्वारा ही निर्मित है। यहाँ का जो भी बडा बौद्धिक सामने आया है वह ऐसे ही सुदूर स्थानों से यहाँ पर आया है। यहाँ पर उसने अपनी उन धारणाओं का पुनर्निर्माण किया है और अपने लिए नई ज़मीन की तलाश की है। इलाहाबाद जो बाहर से दिखाई देता है, अंदर से कहीं अलग किस्म का है। यही कारण है कि इस सरायनुमा शहर में नए ढंग से पनपता हुआ एक और आदमी पैदा होता है और इलाहाबाद से शोर नहीं होता, लेकिन आन्दोलनों का जन्म यहीं से होता है।

उत्तर की ओर इलाहाबाद विश्वविद्यालय की विशाल इमारत के बाद इस कस्बेनुमा शहर की शुरुआत होती है। एक ज़माना था, नेहरू परिवार का जो गुजर गया है। अब हडतालें होती हैं। कर्नलगंज के थाने से लेकर विश्वविद्यालय तक शोर होता है। इलाहाबाद अपनी क्रूरताओं के बाद भी कहीं पर शायद संस्कारों से बहुत सीधा-सादा शहर है।

इलाहाबाद एक शहर में दो शहरों का व्यक्तित्व लिए हुए शहर है। एक शहर वह है जो अपने अतीत के साथ ज्यों-का-त्यों चिपक रहना चाहता है - दारागंज, कीटगंज, अतरसुइया, मुट्टीगंज, लोकनाथ और कटरे का इलाहाबाद। दारागंज विशेष प्रयोजन के कारण बसाया गया इलाका है। इतिहासोक्ति के अनुसार इसे शाहजहाँ के बडे बेटे दाराशिकोह ने बसाया था। इलाहाबाद के अन्दर बसा हुआ शहर इससे बिलकुल भिन्न आयाम लिए हुए है। यह शहर सिविल लाइन्स से शुरू होता हुआ लूकरगंज, अशोक नगर, मंफोर्डगंज, ऐलानगंज और टैगोर टाउन में भैला है। यहाँ साफ-सुथरे बडे-बडे बँगले हैं, उनके फैले हुए लॉन और बगीचे है और बँगलों के चारों ओर फैली हुई खामोशी भी है। यहाँ पर एक-एक बँगला अपने-आप में एक मुहल्ला है, जैसे खामोशी और अकेलेपन के प्रतीक के रूप में इन्हें स्थान-स्थान पर निर्मित किया गया है।

इलाहाबाद अवकाश-प्राप्त व्यक्ति की मनोवृत्ति का शहर है। जैसे बुढापे में आदमी वीतराग हो जाता है, यह शहर भी व्यक्ति को एक बार अपने संसर्ग में लाकर जगड लेता है। किसी प्रकार की औपचारिकता से मुक्त यहाँ का आदमी सहज और सरल होते हुए भी अपने-आप में एक इकाई है। इलाहाबाद वास्तव में किसी बडे गाँव के अन्दर पलता हुआ एक आधुनिक शहर है। आज के इस बढते औद्योगीकरण और शोर से इलाहाबाद अछूता है, और यही इस की विशेषतार भी है। यहाँ उद्योग हैं भी तो उन्हें एक दम शहर से काट दिया गयाहै। इतनीकम दूरी होने पर भी नैनी और इलाहाबाद दो नितान्त अलग शहर लगते हैं।

इलाहाबाद का सबसे आकर्षक इलाका है - सिविल लाइन्स। अंग्रेज साहब ने अपनी सुविधा केलिए इसका निर्माण भी अन्य शहरों की भाँति शहर के बीचों-बीच किया था। मुख्य रूप से महात्मा गाँधी मार्ग के एक खास टुकडे को सिविल लाइन्स कहा जाता है। यहाँ एक विशाल चर्च है, जो इलाहाबाद शहर का कोई विशेष प्रतीक-सा सिद्ध करने केलिए खडा किया गया लगता है। इसके आस-पास अधिकाँशः शांति रहती है। एक तरफ हाईकोर्ट का विशाल भवन है, एक ओर इलाहाबाद जंक्शन है, एक ओर विख्यात इण्डियन कॉफी हाउस है और एक ओर शिक्षा विभाग के कार्यालय।

इलाहाबाद साहित्यकारों का ट्रेनिंग सेन्टर है। इसका कारण शायद यह है कि जिन चुनौतियों और जिस संघर्ष की कल्पना को लिए हुए एक लेखक बाहर से यहाँ आता है, यहाँ पर उसे वे चीज़ें बिलकुल भिन्न संदर्भों में मिलती हैं. नये लेखक को यहाँ पर शारीरिक पीडा की अपेक्षा मानसिक पीडा से गुजरना पडता है, क्योंकि कस्बाई वातावरण होने के कारण यहाँ का साहित्यिक एक-दूसरे की पूरी तरह से अन्तरंगता प्राप्त कर लेना चाहता है। इलाहाबाद में भी मानसिक रूप से पीडित करने की प्रथा है। यहाँ के लेखक को यह कौशल आता है कि बाहरी रूप से आप का अन्तरंग मित्र दीखने के बावजूद वह आप को मानसिक रूप से इतना अकेला छोड देगा कि उस स्थिति को झेल पाना साधारण सामर्थ्य से बाहर की बात है। इसीलिए यह लेखकों का ' ट्रेनिंग सेन्टर ' कहा जाता है। प्रत्येग लेखक अपनी साहित्यिक सामर्थ्य को यहाँ साफ-साफ पहचान सकता है।

इलाहाबाद का एक और आकर्षक इलाका है 'चौक'। चौक अपने स्वभावानुसार व्यापारिक मनोवृत्ति का इलाका है। अच्छी से बुरी हर चीज़ का यहाँ व्यापार होता है। अंग्रेज़ बहादुर का एक शगल हुआ करता था कि उसने हिन्दुस्थानियों के लिए चौक और अपने लिए सिविल लाइन्स बनाया। घंण्टाघर के पास ताँगों की भीड लगी रहती है। घंण्टाघर के पास से एक तंग सडक कल्याणी देवी की ओर अतरसुइया होती चली जाती है, जिसमें राजा मुनुवा का विशाल भवन आज भी पुरानी परंपरा कायम किए हुए है। घंण्टाघर से ही एक सडक खुल्दाबाद की ओर जाती है, जहाँ अधिकांशतः मुस्लिं परिवार रहते है, एक सडक जीरो रोड कहलाती है, जो लगभग चौक का ही एक अंग है।

बाहर से देखनेवाले शांत समझता है। अंदर में सरलता, सादगी और विक्षुब्धता भी है। यही इलाहाबाद की निजी विशेषता है। निराला का निवास पास के दारागंज में था। यहाँ पौराणिकता का महत्व परिलक्षित है। सभी विरोधाभासों से युक्त प्राचीन गाँव का आधुनिक नगर है इलाहाबाद। इस प्रकार बाहर से विचित्र दिखाई देने वाले नगर एक सूक्ष्म और आंतरिक इलाहाबाद की प्रामाणिक जानकारी देने में लेखक को सफलता मिली है।

५. प्रश्न

१. ' इलाहाबाद भारत का तार्थ है ' स्पष्ट कीजिए।

२. ' इलाहाबाद की कहानी बाहर से आए हुए लोगों की कहानी है ' क्यों ?

३. ' इलाहाबाद एक शहर में दो शहरों का व्यक्तित्व लिए हुए शहर है ' स्पष्ट कीजिए।

४. सिविल लाइन्स की विशेषताएँ क्या-क्या हैं ?

५. ' इलाहाबाद साहित्यकारों का ट्रेनिंग सेंटर है ' क्यों ?

६. चौक की विशेषताएँ क्या-क्या हैं ?

७. दारागंज का परिचय दीजिए।

२. काव्य सुमन

१. हिंदी कविता का उद्‌भव और विकास

हिंदी कविता का विकास भारतीय कविता के विकास के साथ हुआ है। हिंदी साहित्य में कविता की परंपरा लगभग बारह-तेरह सौ वर्ष पुरानी है। हिंदी कविता के विकासक्रम को आदिकाल या वीरगाथाकाल, भक्तिकाल, रीतिकाल और आधुनिककाल जैसे चार खंडों में विभाजित किया जाता है।

हिंदी साहित्य के आरंभिककाल को 'आदिकाल', 'वीरगाथाकाल', 'सिद्ध-सामंत-काल', 'चारणकाल', 'बीजवपनकाल' आदि नाम दिए गए है। एक ओर इस काल के जैन, सिद्ध, नाथपंथी साधुओं की कर्मकांडीय रूढ अभिव्यक्तियों में उपदेशात्मकता और प्रचारात्मकता के बावजूद कुछ कविताएँ ऐसी हैं, जो रचनाकारों के आन्तरिक और बाह्य संघर्ष को व्यक्त करती हैं। वहीं दूसरी ओर रासो और रास काव्य परंपरा का साहित्य मिलता है जिसमें एक का संबन्ध वीर और शृंगार प्रधान चरित्र केन्द्रित प्रबन्ध काव्य परंपरा से है। इस परंपरा का प्रसिद्ध काव्य ग्रन्थ चंदबरदाई का पृथ्वीराजरासो है। इसी काल के अंत और भक्तिकाल के प्रारंभ में विद्यापति और अमीर खुसरो की कविताएं मिलती हैं।

भक्तिकाल में दो प्रकार की कविताएं मिलती हैं। एक प्रकार के कवि जो प्रायः दरबारों से संबद्ध थे और दरबार की रूढियों का उपयोग श्रोताओं का मनोरंजन करने के उद्देश्य से लिखते थे। दूसरे प्रकार के कवि धार्मिक संप्रदायों और विश्वासों के आधार पर अपने अन्तःकरण के सुख और विस्तार, आत्मानुभूति की अभिव्यक्ति तथा सामाजिक बुराइयों के सुधार केलिए लिखी गई हैं,जो एक प्रकार से लोकजागरण की कविताएं भी थीं। कबीर, सूर, तुलसी, जायसी और मीरा इस युग के ऐसे कवि हैं जिन्होंने हिंदी कविता को आत्मविमर्शात्मकत व्यापक मानवीय आधार और एक प्रकार का तेवर प्रदान किया तथा दूसरी ओर विभिन्न बोलियों से शब्दों, रुचियों और संवेदनों को ग्रहण कर उस युग के मुहावरे के भीतर अवधी और ब्रज को काव्य भाषा के रूप में न केवल विकसित किया, बल्कि उसे संगठित किया।

भक्तिकाल के अंत में ही हिंदी कविता में एक प्रकार की रसिकता और श्रृंगारिकता बढने लगी थी। इसे रीतिकाल कहा ही इसलिए गया कि इसमें रीतिपरकता यानी लक्षणों या परिभाषाओं के प्रकाश में उदाहरण के रूप में कविता की जाने लगी। विदग्धता इस युग की कविताओं का प्रमुख लक्षण हैं आलंकारिकता, कलात्मकता, शृंगारिकता, कविताओं के आवश्यक लक्षण हैं।इस काल के प्रसिद्ध कवियों में केशवदास, सेनापति, मतिराम, देव, बिहारी, पद्‌माकर और घनानन्द हैं।

आधुनिक काल के हिंदी कवियों ने भावों की विविधता, व्यापकता और शिल्प की ओर विशेष ध्यान दिया। इस दृष्टि से इस युग के कृतित्व को विभिन्न उपयुगों में विभाजित किया जा सकता है जैसे भारतेन्दुयुग, द्विवेदी युग, छायावादयुग, छायावादोत्तरयुग। भारतेन्दुयुग में श्रृंगाररस के प्रति रीतिकालीन कवियों जैसा प्रबल आग्रह न रख कर कवियों ने भक्ति-भाव, राष्ट्र-प्रेम, हास्य रस आदि को भी कविताओं में स्थान दिया है। इस काल के कवियों में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमधन', प्रताप नारायणमिश्र और अंबिकादास व्यास मुख्य हैं। द्विवेदी युग की कविता में आदर्शवाद, समाज-सुधार, राष्ट्रीय मनोवृत्ति आदि के चित्रण की ओर विशेष ध्यान देकर श्रृंगाररस को मर्यादित रूप में ग्रहण करने पर बल दिया गया।

द्विवेदी युग की इतिवृत्तात्मकता कविता की प्रतिक्रिया में १९१८ईं. के लगभग छायावादी काव्यधारा का आविर्भाव हुआ। छायावादी कवियों में जयशंकर प्रसाद, निराला, सुमित्रानंदन पंत और महादेवी वर्मा का मुख्य स्थान है। छायावाद की अतीन्द्रिय भाव-चेतना और मुख्य अभिव्यंजना के प्रति विद्रोहस्वरूप 1936ईं. के लगभग प्रगतिवादी कविता का जन्म हुआ। तारसप्तक की भूमिका में परस्पर भिन्न विचारों और विचारधाराओं के लोगों के एक साथ होने का कारण प्रयोग को माना गया। विषय के बजाय वस्तु और भाषा के प्रयोग पर ज़ोर देने के कारण ये कवि प्रयोगवादी कहलाए। अज्ञेय इसके प्रवक्ता माने गए।

प्रयोगवाद का ही विस्तार 'नई कविता' है। नई कविता का मुहावरा अज्ञेय से बदला हुआ है। इसकी शुरूआत 1952 से मानी जा सकती है। नई कविता के अंतिम दौर में नई कविता के बिंबवादी रूपात्मक आग्रहों के खिलाफ अकविता, युयुत्सावादी, सनातन सूर्योदयी, सहज कविता, ताजी कविता, भूखी पीढी, विद्रोही पीढी, आदि अनेक आंदोलन हुए। कविता आज बहुमुखी हो गई है। वह जीवन के सभी पक्षों को आत्मसात् करके जन जीवन का नई बौद्धिकता तथा नवीन चिंतन की ओर आभिमुख करना चाहती है। उसके संवेदन का क्षेत्र आस-पास के साथ राष्ट्रीय और अनतर्राष्ट्रीय भी हो गया है।

२. दोहा (साखी)

- कबीरदास

१. लेखक परिचय

हिंदी के भक्तिकाल के निरगुण भक्तिधारा के ज्ञानाश्रई शाखा के सर्वश्रेष्ठ कवि हैं संत कबीरदास। उनकी जन्म-मरण-तिथि,माता-पिता आदि विषयों में विद्वानों में मतभेद हैं। माना जाता है कि कबीर के गुरु रामानन्द थे। कबीर की वाणी का संग्रह बीजक नाम से प्रसिद्ध है। उसके तीन भाग है - साखी, सबद और रमैनी। कबीर-काव्य का प्राचीनतम रूप ' गुरु ग्रन्थ साहिब' में संकलित है। इनकी भाषा उस समय की प्रचलित काव्य भाषा का वह प्रकरूप है जो बाद में खडीबोली के रूप में विकसित हुई। आपकी जन-सामान्य की अत्यंत निकट की भाषा के प्रयोग से आप सच्चे अर्थ में सबसेप्रिय जनकवि बन गए हैं। इनकी भाषा में विभिन्न प्रान्तों के शब्द उनकी घुमक्कडी प्रवृत्ति के कारण आ गए हैं, इसलिए इस भाषा को सधुक्कडी या पचमेल खिचडी भी कहा गया है।कबीर की भाषा ने यह सिद्ध कर दिया है कि काव्य केलिए विचार और भाव की प्रमुख तत्व हैं, भाषा गौण। कबीर जन्मजात विद्रोही थे। उन्होंने समाज में व्याप्त कुरीतियों और अनाचारों का विरोध किया। वे सच्चे अर्थ में क्रान्तिकारी समाज सुधारक एवं युगप्रवर्तक थे।

दोहा-१

दोऊ	-	दोनों
काके	-	किसके
पायाँ	-	पाँव
बलिहारी	-	समर्पित
जिन	-	जिन्होंने
गोविन्द	-	ईश्वर
दियो	-	दिया

प्रस्तुत दोहे में कबीर गुरू की महिमा का वर्णन करते हैं। वे कहते हैं कि गुरू और गोविन्द दोनों एक बार मेरे सामने खडे हुए। क्षण भर केलिए में चिंता में पड गया कि पहले किसके पैरों पर पड़ूँ। दूसरे क्षण में मैंने गुरू के चरणों पर अपने को अर्पण किया और उनकी वन्दना की। क्योंकि उन्होंने ही मुझे ईश्वर को बता दिया था।

सद्गुरू की कृपा से ही ईश्वर का ज्ञान होता है। इसलिए कबीर ईश्वर से भी अधिक महत्व अपने गुरू को देते हैं।

दोहा-२

समंत - समुद्र
मसि - ink
लेखनि - pen
बनराई - बना ले
धरती - earth
कागद - paper
तऊ - तब
गुन - गुण
लिख्या - लिखा

कबीरदास कहते हैं कि यदि पूरी धरती को कागज़ बनादें और सात समुद्र के जल को स्याही बनाकर ईश्वर की महिमा को लिखने की कोशिश करें तो समझ सकता है कि ईश्वर का गुण संपूर्ण रूप से लिखना असंभव हैं।

प्रस्तुत दोहे में कबीर ने ईश्वर के अवर्णनीय अनंत गुण का परिचय दिया है।

दोहा-३

बाढे - increase
नाव - boat
दाम - welth
उलीचना - to throw off water
सयाना - clever

कबीरदास कहते हैं कि जब नाव में पानी बढ जाता है तो डूबने से बचने केलिए यात्री अपने दोनों हाथों से पानी को उलीचता है। ठीक उसी प्रकार धन-संपत्ति घर में बढने पर सज्जन उसे उदारता से दूसरों को दे देता है। ऐसा करने से सज्जन सांसारिक सुख-सुविधाओं में डूब जाने से अपने आपको बचाता है। प्रस्तुत दोहे में कबीर ने एक सज्जन का लक्षण बताया है।

दोहा-4

लघुता - smallness
प्रभुता - superiority
प्रभु - god
चींटी - ant
शक्कर - sugar
हाथी - elephant
सिर - head
धूर - dust

कबीरदास कहते हैं कि जिसके मन में विनय की भावना है उसे ही ईश्वर प्राप्त होता है। अहंकार भाव जिसके मन में है उससे ईश्वर सदा दूर रहता है। जब चींटी अपनी विनम्रता से ईश्वर रूपी शक्कर ढूँढ लेकर चलती है तब बडे मस्तकवाले हाथी के सिर पर धूली ही होती है।

प्रस्तुत दोहे में कबीर ने स्पषट किया है कि विनम्रता से ही ईश्वर प्राप्त होता है।

दोहा-5

निंदक - निंदा करनेवाला
नियरे - समीप
आँगनि - आँगन
कुटी छवाय - झोंपडी बनाकर
बिन - बिना
निर्मल करै - साफ करता है
सुभाय - स्वभाव

हमारी निन्दा करने वालों से हमें नहीं घबराना चाहिए क्यों कि उनसे हमारी बलाई होगी। इस आशय को विनोदभरी वाणी में समझाते हुए कबीरदास कहते हैं कि आप की निंदा करनेवालों को अपने घर के आँगन में झोंपडी बनाकर पास ही रखिए। क्योंकि वे पानी या साबुन के बिना आप के स्वभाव को साफ कर देंगे।

३. प्रश्न

१. कबीरदास के गुरु-महिमा-विचार स्पष्ट कीजिए ।
२. ईश्वर के अनंत गुण को कबीर किस प्रकार प्रस्तुत करता है ?
३. नाव में पानी जब बढ जाता है और घर में जब धन बढ जाता है तब कबीर हम को क्या करने का उपदेश देता है ?
४. कबीर के अनुसार जब चींटी को शक्कर मिलता है तब हाथी के सिर पर धूली ही होती है, क्यों ?
५. कबीर निंदकों को अपने आंगन में झोंपडी बनाकर पास ही रखने का उपदेश क्यों देता है ?

३. बाललीला

- सूरदास

१. लेखक परिचय

हिंदी के भक्तिकाल के सगुण भक्तिधारा के कृष्णभक्ति शाखा के सर्वश्रेष्ठ कवि हैं सूरदास। वे वल्लभाचार्य के शिष्य थे। अष्टछाप कवियों में वे सर्वप्रमुख माने जाते हैं। सूरसागर, सूरसारावली और साहित्य लहरी उनकी प्रमुख रचनाएं हैं। सूरसागर उनका सर्वश्रेष्ठ ग्रन्थ माना जाता है। इसके पाँच भाग हैं - विनय, बालकृष्ण, रूपमाधुरी, मुरलीमाधुरी तथा भ्रमरगीत। सूर का सूरसागर उनके भावों एवं गहन अनुभूतियों का अतल सागर है जिसमें उन्होंने गीतों के माध्यम से भक्ति, वात्सल्य एवं श्रृंगार की अत्भुत त्रिवेणी बहाई है।

पद -१

झुलावै	-	swinging
हलरावै	-	हिलाती है
दुलराई	-	प्यार करती है
मल्हावै	-	प्रसन्न बात बनाती है
निंदरिया	-	sleep
काहैं	-	क्यों
तोकौ	-	तुम्हें
कबहूँ	-	कब
मूंद लेत	-	കണ്ണടക്കുമ്പോൾ
फरकावै	-	ഇളകുന്നു
सोवत जानि	-	ഉറങ്ങിയെന്നുക ു
इहिं अन्तर	-	ഇതിനിടയിൽ
अकुलाई	-	വിഷമിച്ചുകൊ ു
जसुमति	-	यशोदा
नन्द भामिनी	-	यशोदा

माँ यशोदा श्रीकृष्ण को पालने में झुला रही हैं। वे कभी पालने को हिलाती हैं, कभी वात्सल्य के आवेश में मुख चूम लेती है, दुलराने लगती हैं और मलहाने-कोई लोरी गाने लगती है, बस बालक को सुलाने केलिए थोडा-बहुत जो भी मुँह में आता है, गुनगुना रही है। गाते-गाते कहती हैं कि अरी नींद ! आ,तू मेरे श्रीकृष्ण को आकर सुला दे, अरी !

तू आकर मेरे लालको सुलाती क्यों नहीं है ? भला तू इतनी देर क्यों कर रही है । क्यों नहीं जल्दी से आ जाति, देख, मेरा श्रीकृष्ण मुझे बुला रहा है, अब तो जल्दी आजा। माँ के इस प्रकार गाने और नींद को बुलाने पर हरि कुछ लीला करते है और लीलाभाव में ही कभी अपनी पलकों को बन्द कर लेते हैं और कभी होंठ फडफडाने लगते हैं, माँ देखती है कि बालक सो गया है, उसे सोया हुआ जान कर लोरी गाना बन्द कर

स्वयं तो मौन हो ही जाती है, वह दूसरों को भी इशारा कर-करके बताती हैं कि देखो, शोर न करना, बालक अभी-अभी सोया है, तुम्हारे शोर करने से बालक कच्ची नींद में जाग जाएगा। लेकिन अभी माँ और औरों को चुप कराने केलिए संकेत कर रही थीं कि भगवान् अकुलाकर जाग उठे, कृष्ण को इस प्रकार जागा हुआ देखकर माँ यशोदा पुनः मधुर-मधुर स्वर में लोरी गाने लगती है। सूरदास कहते हैं कि इस प्रकार माँ यशोदा जिस वात्सल्य सुख का रसपान करती हैं वह सुख तो देवताओं, देवाधिदेव और ऋषि-मुनियों को भी अप्राप्य है। कृष्ण की बाल लीला में बच्चे के मनोविज्ञान का बडा ही सूक्ष्म एवं सजीव चित्रण हुआ है।

पद -१

मैया	-	माँ
कबहिं	-	कब
बढैगी	-	വളരും
चोटी	-	കുടുമ
किती	-	कितनी
मोहि	-	മോഹിച്ചു
पिवत	-	കുടിച്ചു
अजहुँ	-	आजतक
छोटी	-	ചെറുതായിട്ട്
बल	-	बलराम
बेनी	-	बाल
काढत	-	വെട്ടി
गुहत	-	വെടിപ്പാക്കി
न्हवावत	-	കുളിപ്പിച്ച്
ओंछति	-	മുടി തോർത്തുക
नागिन	-	പാമ്പിനെപ്പോലെ
भुईं	-	ഭൂമിയിൽ
लेटी	-	ഇഴയുന്നു
काचो	-	പച്ചയ്ക്ക്
पियावत	-	കുടിക്കും
माखन	-	വെണ്ണ
हलधर	-	बलराम

श्रीकृष्ण माँ से शिकायत करते हैं कि माँ, बता दो, मेरी चोटी कब बढेगी ? कितनी बार मुझे दूध पीते-पीते हो गई पर मेरी यह चोटी आज भी छोटी की छोटी बनी हुई है। तू तो कहा करती है कि अगर तू दूध पिएगा तो तेरी चोटी भी बलराम के समान लंबी और मोटी हो जाएगी और निरंतर काढने, गूंथने और स्नान कराने से मेरी चोटी भी बलराम के समान काली-मोटी नागिन के समान धरती पर लोटने लगेगी - पर

ऐसा तो कुछ भी नहीं हुआ, देख माँ ! वास्तव में बात कुछ और है-तू मुझे कच्चा दूध जिद कर-करके पिलाती है जब कि कच्चा दूध पीने में मेरी तनिक भी रुचि नहीं हैं, और जिसमें मेरी रुचि है वह माखन-रोटी खाने को नहीं देती है। सूरदास जी कहते है कि माँ यशोदा आशीर्वाद देते हुए कहती हैं कि तुम दोनों भाई चिरंजीवी हो, हरि-हलधर की यह जोडी सदा बनी रहे।

३. प्रश्न

१. कृष्म को सुलाने केलिए यशोदा क्या-क्या करती हैं ?

२. कृष्म यशोदा से क्या-क्या शिकायतें करते हैं ?

४. भिक्षुक

- सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

१. लेखक परिचय

महाप्राण सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' छायावाद के प्रतिनिधि कवि हैं। वे रामकृष्ण परमहंस तथा विवेकानन्द के विचारों से प्रभावित थे। कलपना की विदग्धता, आध्यात्मिक चिन्तन की सहजता, दलित वर्ग के प्रति सहानुभूति और छन्दमुक्त काव्य शैली आपकी कविता की प्रमुख विशेषतायें हैं। उपन्यास, कहानी, रेखाचित्र तथा आलोचना के क्षेत्र में उन्होंने अपनी कलम सफलता से चलाई है। निराला हिंदी के एकमात्र ऐसे कवि है, जो अपने काव्य शिल्प को निरंतर विकसित करते रहे है। छंद की मुक्ति के द्वारा उन्होंने भाषा और कविता को भी मुक्त किया। कविता में संगीत और लय के नूतन प्रयोग किए। निराला में विद्रोही चेतना, पौरुष और आवेगमयता के साथ दुःख से निरंतर मंज़ते रहने के कारण गरीबी से उत्पन्न वेदना, विसंगति बोध और आध्यात्मिकता भी है। निराला निशचय ही हिंदी के निराले कवि हैं। अनामिका, परिमल, कुकुरमुत्ता, अर्चना, आराधना आदि उनकी प्रमुख रचनाएं हैं।

२. शब्दों का अर्थ

टूक	-	टुकडा
कलेजा	-	हृदय
पछताता	-	पश्चाताप करके
पेट-पीठ	-	stomach and the back
लकुटिया	-	stick
टेक	-	support
मुट्ठी-भर	-	ഒരുപിടി
दाना	-	grain
मुँहफटी	-	വക്ക്കീറിയ

झोली	-	a small bag
मलना	-	to roub with hands
भूख	-	hunger
भाग्यविधादाता	-	ईश्वर
घूँट	-	a draught
चाटना	-	to lick
जूठी पत्तल	-	എച്ചിലില
झपट	-	a snatch

३. सारांश

अतिदीन होकर एक भिखारी पछताता हुआ पथ पर आता है। जिसके हृदय में करुणा है वह इस दृश्य को देखें तो उसका हृदय दो टुकडे हो जाएंगे ! उस भिक्षुक का पेट और पीठ दोनों भूख से एक हे गई है। लकुटिया के सहारे से वह चलता है। अपनी भूख मिटाने केलिए, एक मुट्ठी-भर अनाज पाने केलिए मूँहफटी पुरानी झोली फैलाते हुए, देखने वालों के हृदय को दो टुकडे करके, पछताता हुआ भिक्षुक पथ पर आता है।

भिक्षुक के साथ दो बच्चे भी हैं। वे बच्चे भीख केलिए सदा हाथ फैलाए हैं। भूख के कारण वे अपने पेट को बाएं हाथ से मलते रहते हैं। दाहिना हाथ दीन दृष्टि से लोगोंकी ओर बढाते हैं। उनके होंठ तो भूख से सूख गए हैं। किसी ने भी कुछ भी न देने के कारण आँसू पीकर रह जाते हैं। कभी सडक पर खडे होकर वहाँ के जूठी पत्तल को चाटने की कोशिश करता है तब कुछ कुत्ते उनसे झपट लेने केलिए सामने अडे हुए हैं।

यह दयनीय दृश्य देख कर कवि कहता है कि हे बच्चो, ठहरो ! मेरे हृदय में करुणा का अमृत है। मैं उससे तुम्हें सींच दूँगा।तुम्हारे दुख को मैं अपने हृदय में खींच लूँगा। तब तुम अभिमन्यु जैसे वीर बन सकते हैं और तुम अभिमन्यु जैसे इस कुव्यवस्थिति के प्रति आक्रोश करके लड सकेंगे। यहाँ भिक्षुकों को बनाने वाले समाज के आर्थिक व्यवस्था के प्रति कवि की विद्रोही भावना जाग उठती है।

4. प्रश्न

१. भिक्षुक का वर्णन कीजिए।

२. भिक्षुक के साथ की बच्चों का परिचय दीजिए।

३. भिक्षुक और बच्चे जीने केलिए और भूख मिटाने केलिए क्या-क्या करते हैं ?

४. भिक्षुक कविता का संदेश क्या है ?

५. ताज

- सुमित्रानंदन पंत

१. लेखक परिचय

सुमित्रानंदन पंत हिंदी के छायावादी काव्य आँदोलन के पुरोधाओं में से एक है। प्राकृतिक सौंदर्य, लोक-मंगल की कामना, मध्ययुगीन संस्कारों का विरोध और विश्व जनीन नवीनताओं का उन्मेष उनकी कविता की प्रमुख विशेषताएं हैं। सौंदर्य कल्पना के सुकुमारा कवि के रूप में विख्यात पंत की कविताओं में अंग्रेजी रोमांटिक कवियों के अतिरिक्त मार्क्स, फ्रायड, गाँधी, अरविन्द और वैदिक साहित्य का प्रभाव दिखाई पडता है। चितंबरा पर उन्हें भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त हुआ।

१. शब्दों का अर्थ

अपार्थिव	-	celestial
विषण्ण	-	दुःखी
निर्जीव	-	जड
क्षुधातुर	-	വിശപ്പിനാൽ ദുഃഖിക്കുന്നവൻ
छाया	-	shadow
कंकाल	-	skeleton
प्रांगण	-	മുറ്റം
कुत्सित	-	contemptible
भूलजाना	-	to forgot, to err

३. साराँश

समाज में गरीबी, बेकारी, भूख आदि से लोग दुःखी रहते समय किसी मृत व्यक्ति की स्मृति अमर बनाने के लिए अनगिनत लोगों के परिश्रम और काफी धन व्ययकर ताज जैसे महल बनाने के कार्य पर कवि अपना विरोध प्रकट करता है। समाज मे व्यक्ति कठिन परिश्रम करने पर भी अपनी भूख मिटा नहीं सकता। अभाव के कारण समाज दुःख का पर्याय बन गया है। सामान्य जनको पहनने केलिए कपडा तथा रहने केलिए एक झोंपडी तक नहीं है। हमारी प्राथमिक आवश्यकताएं तक हमें मिलती नहीं है। इस बीच एक शव केलिए इतना बडा महल बनाना हमारी मूर्खता है। अथवा जीवितों की उपेक्षा कर मृतकों को सजाने का कार्य यदि जारी है तो हमें मरना ही अच्छा है। अर्थार्थ मृतकों को अलंकरित करने से कोई फायदा नहीं है। इससे जीवितों की आवश्यकताएं निभा नहीं पाएगी।

मानव समाजिक प्राणी है। दया, करुणा और सहानुभूति से हम श्रेष्ठ बन जाते हैं। पीडितों के प्रति हमें सहानुभूति प्रकट करना ही चाहिए। मृत गत जीवन की छाया है। उसकी स्मृति में ऐसा महल बनाने का कार्य मूर्खता है। जीवितों के प्रति मुख मोडकर शव सजाने में लग जाते तो संसार निर्जीव हो जाएगा। यह

साहचर्य भयावह है। उत्साही सचेत जन ही संसार को सुन्दर बना सकते हैं।हमें उदात्त भाववाले होना चाहिए।इसलिए ताज हमारे निकृष्ट प्रवृत्तियों का प्रतीक सबित होता है।

मृत निष्प्रयोजन है। उसे सजाने का कार्य सराहनीय नहीं है। ऐसा कार्य जीवितों को मरणासन्न बनाने योग्य है। ऐसी व्यवस्था से युक्त युग बीत चुके हैं। आज संसार विकासशील है। जीवित लोगों की सुख सुविधाएं बढाकर, आपस में मिलकर, विरोधी शक्तियों से संघर्ष कर हमें आगे बढाना है। अथवा मृतकों की पूजा करने वाला भी मृत हैं। दूसरे लोगों की सहायता करने में वे तत्पर हैं। इसलिए ईश्वर भी ऐसे लोगों का सहायक है।

इस कविता में पंतजी का विचार साम्यवादी विचारों से प्रेरित मालुम होता है। समाज में धन का समान वितरण, शोषण मुक्त समाज की परिकल्पना, श्रमिकों का पक्ष ग्रहण, रूढियों तथा परंपरा का निषेध आदि की सफल अभिव्यक्ति इसमें हुई है। ताजमहल को एक नए आयाम से देखकर शोषण के खिलाफ हमारा ध्यान आकृष्ट करनेवाली यह कविता शैली और शिल्प दोनों स्तर पर पंतजी की प्रतिनिधि रचना बनती है।

४. प्रश्न

१. पंतजी 'ताज' को आत्मा का अपमान क्यों मानता है ?

२. पंतजी के अनुसार जीवन का अनश्वर सेदेश क्या है ?

६. नाच

- सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय'

१. लेखक परिचय

आधुनिक हिंदी साहित्य का मसीहा, बहुमुखी प्रतिभा के धनी अज्ञेय ने जिस विधा में लिखा उसे उनकी कृतियों ने संपनेन किया। व्यक्ति और समष्टि की स्वतंत्र सत्ता को स्वीकार करते हुए अज्ञेय व्यक्ति को मूल और सृजन का केन्द्र मानते हैं। समकालीन और परवर्ती साहित्यकारों की वे प्रेरणा रहे और पथप्रदर्शक के रूप में उन्होंने स्वयं नवीन साहित्य आदर्शों को अपनाते हुए रचनाएं की हैं। पत्रकारिता के क्षेत्र में भी अज्ञेय का अप्रतिम योगदान है। 'तारसप्तक' का संपादन करके वे प्रगति वाद के प्रवर्तक बन गए है। साहित्य अकादेमी और भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार से वे सम्मानित किए गए हैं।

२. शब्दों का अर्थ

तनाव	-	tension
खंभा	-	post
तीखी	-	तीक्ष्ण
रोशनी	-	light
खोलना	-	to untie

३. सारांश

'नाच' कविता समाज के लघुमानव के जीवन की विडंबना का प्रतीक है। जन्म और मृत्यु के दो खंभे के बीच तनी हुई रस्सी पर नाच करने का नाम है जिन्दगी। जीना तो कठिन काम है। उसका तनाव निर्मम है। रस्सी पर मैं जो नाचता हूँ उसका मतलब है वह एक खंभे से दूसरे खंभे तक का नाच है। इस प्रयास को और अधिक कठिन बनाने केलिए नियती उस पर तीखी रोशनी पडती है। इस रोशनी के ज़रिए लोग मेरा नाच देखते रहे हैं। नाचनेवाले जो मैं हूँ किन्तु लोग मुझे नहीं देखते हैं। वे उस रस्सी को जिस पर मैं नाचता हूँ उसे भी नहीं देखते हैं। वे उस रस्सी को तनी हुई खंभों को भी नहीं देखते हैं और रोशनी को भी नहीं देखते हैं। लोग केवल मेरे नाच को ही देखते हैं। किन्तु आश्चर्य की बात यह है कि जो मैं नाचता हूँ और जो जिस तनी हुई रस्सी पर नाचता हूँ जो जिन खंभों के बीच है, जिस पर जो रोशनी पडती है, उस रोशनी में उन खंभों के बीच उस रस्सी पर असल में मैं नाचता नहीं हूँ ! लोग केवल मेरे श्रमों को नाच सा समझते हैं क्योंकि वे भी अपने अपने अन्तर्द्वन्द्वों में जकडे हैं। दरअसल मैं केवल उस खंभे से इस खंभे तक दौडता हूँ कि इस या उस खंभे से रस्सी खोल दूँ। मुझे ज़िन्दगी रूपी रस्सी के तनाव को ढीला करने का अदम्य चाह हैं। यदि रस्सी के तनाव ढीला हो जाय तो मुझे इस श्रम से मुक्ति मिल जाएगा। किन्तु क्या करूँ इसका तनाव ढीला ही नहीं इसलिए मुझे इस खंभे से उस खंभे तक दौडना पडता है। जीवन के रस्सी का तनाव वैसा ही बना रहता हैं। सब कुछ वैसा ही बना रहता है। अर्थात् लगता है कि इससे मुक्ति असंभव हो रहा है। मेरे इस असफल काम को, लोग जो नाच समझते हैं, जारी रखना पडता है, जो मेरी नियती है।

३. सारांश

१. लोग व्यक्ति की नाच को कैसे देख रहे हैं ?

२. व्यक्ति की नाच की विडंबना क्या है ?

३. व्यक्ति की असली ज़िन्दगी कैसा है ?

७. एकलव्य

- कीर्ति चौधरी

१. लेखक परिचय

आधुनिक हिंदी कवयित्रियों में कीर्ति चौधरी की विशिष्ट पहचान है। आपकी असली नाम कीर्तिबाला सिन्हा है। जीवन के प्रति उनका दृष्टिकोण समन्वयात्मक और रचनात्मक है। अभिव्यक्ति और शैली की सादगी उनकी निजी विशेषता है। 'कवितायें और खुले हुए आसमान' उनके काव्य संकलन हैं।

२. शब्दों का अर्थ

उपलक्ष्य	-	उद्देश्य
साध्य	-	लक्ष्य
प्रत्यंचा	-	धनुष की डोरी
चंचलगति	-	swift movements
बेधना	-	to pierce
साधना	-	to aim at
अभिज्ञ	-	जाननेवाला
निष्ठा	-	loyalty
माटी की मूरत	-	मिट्टी की मूर्ति

३. सारांश

एकलव्य ने द्रोणाचार्य के माँगने पर अपना दाहिना अंगूठा उन्हें गुरुदक्षिणा के रूप दिया। उस घटना पर पुनःविचार करते हुए और अपने मन में प्रतिष्ठित गुरू की मूर्ती को संबोधित करते हुए एकलव्य कहता है कि आप ने गुरुदक्षिणा के रूप में सिर्फ मेरा दाहिना अंगूठा माँगा। वह तो आप केलिए समर्पित ही था। मेरे जीवन के लक्ष्य, उपलक्ष्य, सब उपकरण तथा उद्देश्य भी आप के चरणों में पहले से ही समर्पित थे। यह बाण भी उन्हीं का था और यह धनुष की डोरी भी उन्हीं की थी। मेरे ये दोनों हाथ और इन बाणों की चंचल गती भी उन्हीं की थी। इन सब को उन्हें निर्माल्य के रूप में चढाया था।

एकलव्य कहता है कि अगर मैं ने लक्ष्य बेधे थे और अगर मैं ने बाण साधे थे तो मानों मैं ने गुरू के चरणों पर चढे हुए पुष्पों को बार-बार माधे से लगाया था और सिर नवाया था। मेरे सब प्रयत्न आप के आशीर्वाद के फलस्वरूप समझता रहा और इसलिए सब कुछ आपका ही है। लेकिन आप तो उससे अनभिज्ञ रहे। अथवा मेरा वह सब समर्पण झूठा था। मेरी निष्ठा और मेरी आत्मा के भीतर रहनेवाली सच्ची श्रद्धा एवं भक्ति आप केलिए समर्पित थी। लेकिन मुझे अनुभव हो रहा है कि आप नहीं थे, बल्कि आप मिट्टी की मुर्ति मात्र थे। इसलिए मिट्टी की मुर्ति से मानवोचित व्यवहार की प्रतिक्षा करना व्यर्थ ही था। इसलिए एकलव्य को अपना सारा समर्पण झूठा लगता है।

४. प्रश्न

१. एकलव्य के समर्पित भाव को स्पष्ट कीजिए।

२. एकलव्य को गुरू सिर्फ माटी की मूरत क्यों लगता है ?

८. मतदाता

- सुदामा पाण्डे 'धूमिल'

१. लेखक परिचय

धूमिल नाम से विख्यात कवि सुदामा पाण्डे की कवितायें प्रहार और पर्दा फाशा की हैं। व्यंग्य, विद्रोह और आक्रोश उनकी कविताओं का मूलभाव है। धूमिल आम लोगों के पक्ष में खडे हैं। इसलिए उन्होंने राजनीतिक और सामाजिक यथार्थ को उनके अंतरंग विसंगतियों के साथ चित्रित किया है।

२. शब्दों का अर्थ

पेट	-	उदर
बिस्तर	-	bed
कदम	-	ചുവട്
जंगल	-	forest
जंग	-	संघर्ष
नाखून	-	nail
जनगणना	-	census
सार्थक	-	सफल
सार्वजनिक	-	public

३. सारांश

पेट अपनी ही जगह में स्थिर होता है लेकिन पैर चलता है। भोजन की ओर तीन कदम और बिस्तर की ओर दो कदम काफी है। लेकिन कभी-कभी रास्ते में हैरान होकर रुक जाएगा कि किसको वोट देना है बाँएवालों को या दायेंवालों को। फिर निर्णय लेना पडता ही है। रोटी कमाना, आराम करना हमारी मूलभूत आवश्यकता है। उसके लिए हमारा पैर चलाना ज़रूरी है। लेकिन मतदान केलिए जाते वक्त रास्ते में एक दम रुककर सोचना पडगा किसको वोट देना है ? अथवा वोट देने लायक कोई नहीं होने की संभावना है।

जंगल में जाने केलिए कोई सिगनल की ज़रूरत नहीं है। वहाँ शक्ति की नीति ही कायम है। सब स्वतंत्र है। अपने मतभेद के कारण पीछे बाँधा हाथ अपनी ही आँखों के सामने खोलकर 'ये मेरे ही हाथ है' तक कहने की स्वतंत्रता है। आँशीक स्वतंत्रता ही नई मतगणना को सार्थक बनाती है। सुपरिचित मुहावरा जो समाज में फैला हुआ है कि भाइयों ! कहने का यही मतलब है कि जनतंत्र जनता से नहीं, घर के संघर्ष से शुरू होता है। पहली बार यह जानने से खुश होगा कि मतपेटी में मतपत्र के साथ अपना समझ नहीं डाला है। अगली चुनाव रूपी लडाई केलिए दाँत और नाखून इसी पेटी पर सुरक्षित है।

मतदाता अपना निर्णय नहीं कर पाता है। संघर्ष के कारण, पूरी स्वतंत्रता के अभाव के कारण अपनी मर्जी के विरोध में वोट डालने को वह मज़बूर होता है। लेकिन नेतागण जाल बिछाकर अगले चुनाव की प्रतीक्षा में सुसज्ज रहे हैं। यह प्रजातंत्र की धोखेबाजी है। अथवा स्वतंत्रता की पराधीनता है। अर्थात् मतदान अपनी मर्जी से करने की स्वतंत्रता और अधिकार लोगों को अनिवार्य है।

४. प्रश्न :-

१. मतदाता कब दुविधा में पड जाता है ?

२. जंगल की स्वतंत्रता कैसी है ?

३. मतदान की विडंबना क्या है ?

८. मुक्ति

- अरुण कमल

१. लेखक परिचय

प्रगतिशील कविता की वर्तमान पीढी के रचनाकारों में अरुण कमल सर्वाधिक चर्चित कवि हैं। उनकी कविताओं में मानव जीवन और समाज की विसंगतियों के अद्‌भुत चित्र मिलते है। नए इलाकों की तलाश, पुराने की पहचान के बगैर संभव नहीं है। इसलिए तारतम्यता और नवाचार के साथ ताजे बिंब, लक्षणाएँ और बातचीत के प्रयोग उनकी कविताओं के प्रमुख सरोकार हैं। जीवन से निरंतर जुडे रहना उनकी प्रमुख विशिष्टता है।

२. शब्दों का अर्थ

हिलना	- to shake
साँवला	- blue black
पाँक	- कीचड
बाँटना	- to distribute
घोंटना	- to cram
सूर्यमुखीफूल	- sunflower
खिच्चा	- कच्चा
धुरी	- spindle, axis
पूनी	- cotton

३. सारांश

मुक्ति में सेवामुक्त पिता के असफल जीवन की व्यथा का चित्रण है। वे दूसरों को पढाते-पढाते समय बीत गया। अपने बच्चे को ध्यान न दिया। समय बीत जाने पर पिट कर पढाते समय उसका मन व्यथित होता है। वह कह भी देता है। आज अपने बेटे को पिट कर पढाते समय अनजाने ही मेरी आँखें भर आई। तुम रोए नहीं, हिले नहीं, एक के ऊपर दूसरे पैर रखकर चुपचाप बैठे रहे। तब मेरी पिटाई का सांवला निशान मैं ने तेरे पैरों पर देखा। पढाते वक्त मैं बाढ जैसा था। तुम अनपढ रहने के नाते में उतरे पानी के क्षेत्र का मालिन्य हो गया हूँ। कीचड भरी गलियाँ, बदबू से युक्त वातावरण और धाराशाई भित्तियाँ जैसे अपना विनाश देख रहा हूँ। आज की अवस्था का कारण शायद मैं ही हूँ। तेरी शिक्षा के बारे में ज़रा भी ध्यान मैं ने नहीं दिया था। आज मुझे मालुम हो गया है कि तुम अज्ञानी है। मैं ऐसे विचारों से दुखी हूँ। पढाते समय जो रक्त मेरी नाडियों को उत्तेजित करता था वही रक्त आज मेरे हृदय को आघात पहूँचाता है।

इस स्थिति का करण मैंही हूँ। मैं अब एक अवकाश प्राप्त अध्यापक हूँ। दिन भर घूँम कर मैं ट्यूशन लेता हूँ।अपने बेटे के साथ रहने का समय नहीं मिल गया। घर से निकलते वक्त तुम सोये हुए हो, वापस आते सय तुम सो चुके होते। अवकाश मिले चार साल हुए। अध्यापन करते समय छात्रों से भरी कक्षाएं उनकी

फूल सी आँखें, खल्लियाँ पकडी ऊँगलियाँ कितना अच्छा लगता था। आज मैं आज़ाद हूँ। किन्तु इस जीवन में मैं ने क्या पाया ? बच्चे बडे हो गए हैं। पारिवारिक जीवन अधूरा है। बच्चे बेरोजगार हैं। इसप्रकार की ग्रृहस्थी से मुक्ति कहाँ है ? लगता हैं कि जीवन शुरू ही हो गया है। जीवन रूपी चरखे में पूनी डाली ही है। आज बेटे को पढाने केलिए मेरे हाथ क्यों उठ गए हैं ? बेटे तो असफल ही गए थे फिर मेरे हाथ उठने से कोई फायदा नहीं है।

४. प्रश्न

१. अध्यापक की आँखें क्यों भर आई ?

२. अध्यापक अपने जीवन को असफल क्यों मानते हैं ?

३. सेवामुक्त अध्यापक की जिन्दगी कैसी थी ?

४. 'अभी ही तो शुरू हुई जिन्दगी' अध्यापक इस प्रकार सोचने का कारण क्या है ?

१०. शोकगीत

- कात्ययनी

१. लेखक परिचय

हिंदी की वर्तमान शीर्षस्थ कवयित्री है कात्ययनी उच्च शिक्षा के बाद कुछ समयतक अंशकालिक पत्रकारिता, फिर स्वतंत्र लेखन। संस्कृतिक, राजनीतिक और नारी मोर्चों पर सक्रिय भागीदारी। कात्ययनी समय की नब्ज पकडनेवाली कवयित्री है। एक ओर वे उत्तर आधुनिकता की मृगतृष्णा, सांप्रदायिक नव-फासीवाद और बाज़ारू उपनिवेशवाद को पहचानती हैं तो दूसरी ओर आम आदमी की व्यथा और प्रताडित नारी की पीडा को भोगती है।

२. शब्दों का अर्थ

गुज़ार दी	-	to pass time
आँखों का तारा	-	the apple of one's eye, beloved
आलोचक	-	a critic
राजदुलारे	-	beloved
मामूली	-	ordinary, common
जुटाया	-	collected
सब्जी	-	vegetable
खरीददारी	-	purchase
जिम्मेदारी	-	responsibility
भरपूर गुस्से	-	over flowing anger
जुलूस	-	a procession

महाँगाई	-	expensiveness
खिलाफ	-	against, opposed to
नारा	-	slogen
पर्चा	-	poster
कारगुजारी	-	satisfactory work

३. सारांश

मैं ने मेरी जिन्दगी इसप्रकार ही बिता रही थी। इस के बीच में कोई महाकाव्य नहीं रच सका। उस महाकाव्य के कारण पाठकों की आँखों का तारा नहीं बना और किसी आलोचक-श्रेष्ठ के राजदुलारे बन सके। मेरी पूरी जिंदगी मैं इस प्रकार व्यर्थ बना दी हैं।

मैं ने एक सीधा सादा जीवन ही बिताया था। एक साधारण आदमी के समान मैं ने भी राशन-पानी जुटाया था और सब्जियों की खरीददारी भी की। इस प्रकार पूरी जिम्मेदारी के साथ मैं ने अपना साधारण जीवन बिताया था। महंगाई के खिलाफ में हुए जुलूस में भरपूर गुस्से के साथ मैं ने भी शामिल हुआ था। हडताल पर निष्ठापूर्वक गया भी था। इसलिए एक शांत सुरुचिपूर्ण अध्ययन-कक्ष नहीं बना सका। जब एक उत्कृष्ट कविता लिखने का समय था, उस हारे हुए समय में भी उसे छोड कर दीवारों पर नारे लिख रहे थे। जब अपने समय की सर्वाधिक चर्चित कहानी लिखनी थी तब हडताल का पर्चा लिख रहे थे। इस प्रकार वैयक्तिक महत्व को पर्वाह किए बिना सामाजिक सेवा में लगे रहने के कारण जिन्दगी में अंत तक सामान्य ही रहना पडा। इसलिए कह सकता है कि जिन्दगी असफल हो गया है। मैं ने जिन्दगी से समझ गया कि जो अपनी सभी विलक्षण कारगुज़ारियों को मानवता की सेवा में प्रस्तुत करता है वह कभी भी महान नहीं हो सकता। जो सामान्य हो कर मरता है उसके प्रति कोई भी गणमान्य कवि एक शोक गीत नही लिखेगा। फिर भी मैं समझता हूँ कि यह कठिन कहानी का सुखांत ही है। जो व्यक्ति अपनी स्वार्थ सिद्धी केलिए सामाजिक सेवा न करके अपनी उन्नती मात्र केलिए परिश्रम करता है वह समाज में महान व्यक्ति हो जाता है। उसके प्रति जनता श्रद्धा अर्पित करने को तैयार हो जाते हैं। किन्तु जो व्यक्ति अपनी बात भूल कर समाज की सेवा करता है वह कभी-भी महान नहीं हो जाता और जनता उनके प्रति श्रद्धा भी नहीं अर्पित करता हैं। कृत्रिम महान व्यक्तित्व के पीछे जो स्वार्थता छिपी रहती है उसका पर्दाफाश इस कविता का लक्ष है।

प्रस्तुत कविता समान्य जनता के महत्वपूर्ण समाजिक चेतना पर भी प्रकाश डालता है। समान्य जनता के जीवन के प्रति कोई कवि किसी महाकाव्य शायत नहीं लिख सकता है फिर भी समान्य जनता के कठिन जीवन स्वार्थता की दृष्टि से देखें तो असफल है। परन्तु सामाजिक भलाई की दृष्टि से देखें तो वह सुखांत जीवन की है अथवा अत्यन्त सफल है।

४. प्रश्न

१. कवि कैसे ज़िन्दगी गुज़ार दी ?

२. कवि अन्त तक सामान्य ही रहे, कैसे ?

३. कवि का कठिन जीवन कहानी का सुखांत कैसे हो जाता है ?

११. विज्ञापन सुंदरी

- लीलाधर जगूडी

१. लेखक परिचय

लीलाधर जगूडी वर्तमान हिंदी कविता के अमिट हस्ताक्षर हैं। पिछले चार दशकों से अपने काव्य-वैविध्य, भाषिक प्रयोगशीलता के कारण जगूडी की कविता हमेशा अपने समय में उपस्थित रही है और उसमें समकालीनता का इतिहास दर्ज होता दिखता है। इन कविताओं से अनुभव का आकाश एक साथ ऊँचा और गहरा विस्तृत और सघन हुआ है। जगूडी की कविताएँ हमें हिंदी कविता का एक नया व्यक्तित्व दिखाती हैं। इसकी वजह कथ्य के अलावा इन के उस शिल्प की विविधता में भी जो अत्यंत संवेदनशील भाषा और जोखिम उठाती प्रयोगशीलता से भरी हुई है।

२. शब्दों का अर्थ

विज्ञापन	-	advertisement
ज़रूरतें	-	needs
शिकार	-	to hunt
समस्या	-	problem
प्रस्तुत	-	to present
बाज़ार	-	market
गोबर	-	cowdung
उपला	-	dried cowdung cake
गबरू	-	rural, rustic
उत्पीडन	-	harasement
कमाओं	-	earning
बीमारियाँ	-	sickness, illness
साबुन	-	soap
खिलौना	-	toys
मैल	-	dirt, filth
प्रायोजित	-	sponsered
छरहरी	-	slim
जाँचना	-	to test
उत्पादक	-	productive
दाम	-	price
होड	-	competition
पसीना	-	sweat

मामला	-	problem
कठपुतली	-	puppet
परिधान	-	cloth
तलाश	-	quest
कैंची	-	scissors
कोठरी	-	dressing room
दर्जी	-	a tailor
धज्जी	-	shred, lath
खान-दान	-	family, dinasty
उपहार	-	gift

३. सारांश

समाज में, जीन में और सभी जगह में विज्ञापन का हस्तक्षेप हो रहा है। आजकल हमारा जीवन विज्ञापन सुंदरी से रूपायित हो रहा है। इस मामले में हमें हमारे वजग से देखने का, समझने का कोई मौका नहीं मिलता है। हमारे सामाजिक जीवन में हमारी आवश्यकताओं के हम कितने शिकार बना रहे है ! हमारे जीवन में वास्तव में इतने ठेर सारी चीज़ें विज्ञापन द्वारा प्रस्तुत करने योग्य कहाँ हैं ?

अब हमारा जीवन और सामाज एक बहुत बडा बाज़ार हो गया है। यहाँ विज्ञापन केलिए विश्व सुंदरी की ही ज़रूरत है। नहीं तो विश्व सुंदरी से क्या फायदा है ? और इन विश्व सुंदरियों ने क्या करती है ? जीवन में कितने अनुपयोगी और कितने अदर्शनीय चीज़ें इन विश्व सुंदरियों के ज़रिए प्रस्तुत करते हैं ! हम जैसे सामान्य जनता के अप्रस्तुत जीवन में हर वक्त प्रस्तुत हैं गोबर, थापती, उपले पाथती गरीब गंवारू औरतें। उन्हें शायत विश्व सुंदरियों की आभा भी नहीं होगी। यहाँ के उत्पीडित कमाऊ बच्चों की अस्थाई नींद और स्थाई बीमारियों से शायत वेपरेशान भी हैं। किन्तु इस यथार्थ को छिपाकर विज्ञापन द्वारा वे समझाते रहे हैं कि सफल और सभ्य समाज में साबुन, पाउडर, क्रीम और हिंसक खिलौनों की ज़रूरत हैं।

पुरानी सत्री के मैल से पैदा आधुनिक सत्रीयाँ जो आर्थिक सत्रीयाँ मान ली गई हैं। नई सामान बेच रही है जिस का विवेक किन्तु प्रायोजित विवेक है। जीवन में कौन नहीं चाहता है कि लंबी छरहरी और वाक् पटु लडकियाँ हों ? किन्तु इस स्वाभाविक लालसा को बाज़ार में प्रायोजक शोषण कर रहे हैं। बाज़ार के इस युद्ध के बीच में दर्शकों की विवेचन बुद्धी नष्ट हो जाता है। कृत्रिमिक शारीरिक सौंदर्य में भ्रमित होकर लडके तो लडकियाँ की बौद्धिक सौंदर्य जो सबसे मूल्यवान है उसे जाँचा भी नहीं करते हैं।

मैं कितना उत्पादक हो सकता है ? इस का उत्तर साबुने और डिटर्जेन्ट पाउडरों के बीच में हो रहे युद्ध से जाना जा सकता है। यहाँ सौंदर्य के मैनेजर अधिक सुन्दर दामों पर उसे बेचने की होड में है। शरीर में होने वाले पसीने से बचने के हज़ार उपाय करते हुए जीने की प्रेरणा बाज़ार संस्कृति हमें सिखाती रही है। किन्तु वही लोग स्वास्थ्य केलिए पसीना निकालने केलिए महँगी मशीन पर व्यायाम करने का उपदेश भी देते हैं ! यह तंत्र व्ययशक्ति और क्रयशक्ति का शोषण करने केलिए सफलता पूर्वक ढंग से चलाता रहा है।

इस होड के बीच में वायुशक्ति में साँस लेते-लेते क्षीण होती हुई आयुशक्ति की समस्या उस सुन्दर स्त्री की भी है जो हम भूल जाते हैं।

कठपुतलियाँ बराबर की सुन्दरियाँ अस्वीकार्य को स्वीकार्य बनाती है, वे बेजोड लंबी है, कृत्रिम सौंदर्य से युक्त हैं, स्वाभाविक सौंदर्य पर उनका विश्वास नहीं है ये कैंची बराबर चलती है। देह का प्रदर्शन होता है। सजधज कर प्रदर्शन केलिए कमरे में रहती है। वस्त्र का प्रदर्शन या विज्ञापन नाममात्र वस्त्र पहनकर वे करती है। प्रसवपीडा रहने वाली स्त्री यहाँ नहीं है। विज्ञापन सुन्दरी तो पोषित करती है। संपन्न बच्चों को। उन्हें खिलाने, सुलाने स्वस्थ बनाने का कार्य सुन्दरियों के माध्यम से होता है। स्वाभाविक परिवेश से प्रकड सौंदर्य कोई नहीं देखता।

कवि पूछते हैं कि इस माया बाज़ार में जो स्वास्थ्य और सुरक्षा से पैदा हुआ सौंदर्य हमें अपने चारों ओर के बच्चों में क्यों नहीं देखता है ? विज्ञापन की सुंदरियाँ किसी प्रायोजक के निर्देशानुसार ही चलती हैं। अपने नए-नए विज्ञापन केलिए ही ये सुंदरियाँ अधिकतम अनाथ और विकलाँग बच्चे को पाना चाहती है। इस तरह के भ्रमों के बीच में एक नया विज्ञापन आता है कि शिशुओं को स्तनों से ही दूध पिलाएँ ! इसे कवि विश्व व्यवस्था में आया नया परिवर्तन मानता है। कवि हमें चेतावनी देते हैं कि विज्ञापन केवल प्रायोजकों का शोषण का साधन है। विज्ञापन द्वारा जो उपज हमारे सामने विश्व सुंदरियों के सहारे से परिचित कराते हैं वह नकली हैं, बेमूल्य है। एक दिन हमें इस सच्चाई को समझना ही पडेगा तब ही हम बाज़ार-संस्कृति की शोषण से मुक्त हो जा सकते हैं और उस घटना को विश्व व्यवस्था का नया परिवर्तन भी समझा जाएगा।

४. प्रश्न

१. हमारे जीवन को विज्ञापन कैसे शिकार करते हैं ?

२. विज्ञापन की विश्व सुंदरियों ने क्या करती है ?

३. आधुनिक स्त्री पुरानी स्त्री से कहाँ तक भिन्न है ?

४. बाज़ार के शोषण का परिचय दीजिए।

५. विज्ञापन की कृत्रिमता का परिचय दीजिए।

६. कवि किसको विश्व व्यवस्था में परिवर्तन मानता है ?

७. ' विज्ञापन सुंदरी' कविता का संदेश क्या है ?

१२. तीली

- उदयप्रकाश

१. लेखक परिचय

उदयप्रकाश आधुनिक हिंदी के सर्वाधिक लोकप्रिय रचनाकार हैं। कविता, लेख, साक्षात्कार, अनुवाद आदि क्षेत्र में आप विख्यात हैं। आप बहुत सरल और सीधी सादी भाषाशैली में अपनी बात कह जाते है। अपने समय की विसंगतियों अपने समय के संघर्षों और अपने समय की वास्तविकताओं को बखूबी अपनी रचना का विषय बना लेते हैं और अपनी रचनाओं में वे इन विडंबनाओं को इस तरह प्रस्तुत करते हैं जैसे हम सीधे-सीधे घटना से जुडे हुए हैं अथवा उसका साक्षात्कार कर रहे हैं। आस-पास घटती हुई सामान्य सी लडाने वाली घटनाओं की कवि अपनी सूक्ष्म दृष्टि से देखकर उसे किस प्रकार अपनी काव्य पंक्तियों में ढाल लेता है इसका पता ही नहीं चल पाता।

२. शब्दों का अर्थ

तीली	-	match stick
पांडुलिपि	-	manu script
आस्था	-	faith
पैगंबर	-	a prophet
हरकत	-	undesirable behavior
चाकू	-	knife
मटिया	-	earthern
गुंबद	-	a dome
मलबे	-	wreckage
ढलाहुआ	-	moulded
सीसा	-	lead
जटिल	-	complicated, difficult

३. सारांश

सबसे मुश्किल और महान् चीज़ों को नष्ट करना सब से सरल हैं। इतिहास सबसे अमूल्य, प्राचीर औरदुर्लभ पांडुलिपि को राख बना देने केलिए एक तीली ही पर्याप्त है। लुप्त सभ्यताओं की अज्ञात लिपियों को जो अबतक पढी न जा सकी है उसे राख बना देने केलिए किसी मिथक नायक के शौर्य और शोक के प्रतीक को राख बना देने केलिए, किसी समाज के स्मृति-कोष, किसी समुदाय के प्राक् बिंबों को या किसी समूह की अस्मिता को राख बना देने केलिए एक तीली ही पर्याप्त है। एक तीली से समाज के किसी

निरालंब गरीब का घर या किसी अभागी स्त्री की जवान देह को राख बना कर सकता है। किसी आस्था केईश्वर और किसी धर्म के पैगंबर को एक तीली से राख बना कर सकता है। किसी चिंपानसी, किसी गुँडे या गुरुल्ला की ज़रासी हरकत को समाप्त करने केलिए सिर्फ एक ही तीली काफी है। मोनालिसा की रहस्यपूर्ण उस हाँसी की हत्या केलिए बस एक रुपये का चाकू, बीस पैसे की ब्लेड और दो पैसे की तीली के साथ किसी अपराधी का मामूली सा पराक्रम ज़रूरत से कुछ ज्यादा ही है। स्थापत्य के इतिहास में संगमरमर के सबसे श्रेष्ठ और सबसे अदभुत गुंबद को मलबे में बदलने केलिए डेढ किलोका मटियाँ लोहे का एक धुन ही काफी है।

यदी एक अँधेरा कोने में रहकर एक ज़रा-सी फुर्ती से डेढ औस का ढला हुआ सीसा का प्रयोग करके किसी कवि, किसी सन्यासी, किसी सूफी, किसी मूँहफट जोकर या किसी विरोधी को राजधानी की सडक पर सदा केलिए चुप और ठंडा करने को सकता है। अर्थात् सबसे लंबी और जटिल प्रक्रीया में बनी चीज़ों को खतम करना सबसे संक्षिप्त और सबसे सरल बात है। अर्थात् महान कार्यों को करना बहुत कठिन काम है। लेकिन उसे राख बना देने का काम बहुत सरल है।

४. प्रश्न

१. तीली की विशेषता क्या है ?

२. तीली कविता का संदेश क्या है ?

१३. स्त्रियाँ

- अनामिका

१. लेखक परिचय

अनामिका हिंदी की उन महत्वपूर्ण कवयित्रियों में से एक है जिन्होंने अपनी कविताओं के द्वारा नारी विमर्श को एक नया आयाम प्रदान किया है। अनामिका बहुत ही साधारण भाषा में अत्यंत प्रभावी बातें कह जाती है और अपनी कविताओं की माध्यम से नारी जीवन की विसंगतियों का यथार्थ पाठकों के सामने सीधे-सादे रूप में रख देती हैं।

२. शब्दों का अर्थ

चना	-	grain
लिफाफा	-	envelop
कलाईघडी	-	wrist watch
अलस्सुबह	-	early morning
ठसाठस्स	-	over crowded
ठुँसी	-	to stuff full
रिश्तेदार	-	relative
कायदेसे	-	by order
ठिठुरना	-	to be chilled
टिड्डियाँ	-	a locust
चीख	-	shriek
ऊबी	-	boredom
सरपरस्त	-	guardian
शगल	-	ocupation
कनखियाँ	-	a glance
बख्शो	-	बचाओ

३. सारांश

पहले जो कागज़ बच्चों की फटी कॉपियों का था जो बाद में चनाजोरगरम के लिफाफे बनाने केलिए उपयुक्त होती है उसे जिसप्रकार नकारात्मक एवं बेमूल्य समझ कर उसमें जो लिखा है उसे गहराई में या उतना महत्वपूर्ण से जिसप्रकार नहीं पढा जाता है ठीक उसी प्रकार हम स्त्रियों को भी इस समाज ने पढा गया है। अर्थात् पुरुष केंद्रित समाज स्त्रियों को महत्वहीन ही मानता है। अलस्सुबह में अलार्म बजने के बाद उनींद लोग क्रुद्ध होकर कलाई घडी जिसप्रकार घृणा से देखते हैं ठीक उसी प्रकार घृणा की दृष्टि से ही वे हमें देखते हैं।

ठसाठस्स ढुँसी हुई बस में सस्ते कैसेटों पर फिल्मी गाने किस प्रकार विवश होकर सुने जाते हैं ठीक उसी प्रकार उडते मन से विरस भाव से हम को सुना गया है। बहुत दूर के रिश्तेदारों के दुख की तरह हमें भी नगण्य मानकर भोग गया है। इस नगण्यता हमें जब असह्य लगा तब एक दिन हमने कहा कि हम भी इंसान हैं। बी.ए. के बाद जिस प्रकार श्रद्धा से पढा होगा ठीक उसी प्रकार हमें एक-एक अक्षर-सा श्रद्धा से कायदे से पढो। जो ठिठुरते हुए व्यक्ति बहुत दूर जलती हुई आग को किस प्रकार प्रतीक्षा से देखी जाती है। उसी प्रकार हमें भी देखो। नई-नई सीखी हुई भाषा को जिस प्रकार सावधानी से समझी जाती है उसी प्रकार हमें भी समझने की कोशिश कीजिए और अपूर्व अनहद की तरह हमें सुनो !

इस प्रकार सुनते ही किसी अदृश्य शाखा से उठनेवाली टिड्डियों के समान चीख हुआ- 'दुश्चरित्र महिलाएँ'-किसी के देखरेख में पली जंगली लताएं जैसी और आरोप लगाया कि यह कहानियाँ और कवितायें खाती-पीती, सुख से ऊबी और बेकार बेचैन आवारा महिलाओं का ही है। इसके बारे में थोडी ही लिखी हैं और इसके अंदर कनखियाँ, इशारे और कनखियाँ छिपी रही। इसलिए बाकी कहानी भी बस कनखी बन गई है। इस संदर्भ में स्त्रीयों के अंदर से एक प्रार्थना चीक बनकर एक बम की तरह विस्फोड सा बाहर की ओर आ गया 'हे परम पिताओं और हे परम पुरुषों हमें इस दुःस्थिति से बचाओ, बचाओ अब हमें बचाओ....।' इस प्रकार स्त्री की अस्मिता एवं स्वत्व को पुरुषकेन्द्रित समाज में प्रतिष्टित करना कविता का लक्ष्य रहा है।

४. प्रश्न

१. समाज स्त्रीयों को कैसे समझता है ?

२. 'हमें कायदेसे पढो' स्त्रीयाँ क्यों इस प्रकार माँगने लगीं ?

३. स्त्रीयों की माँग सुनते ही समाज की प्रतिक्रिया क्या थी ?

४. परमपुरुषों से कवयित्री की प्रार्थना क्या थी ?

Module III 1. <u>हिन्दी कहानी का उद्भव और विकास</u>

कहानी गद्य साहित्य का अत्यंन्त लोकप्रिय रूप है। भारत में कथासाहित्य की लंबी और विकासमान परंपरा रही है। किन्तु हिन्दी कहानी का उद्भव और विकास बीसवीं शताब्दी की देन है। सन् 1900ई में हिन्दी की महत्वपूर्ण साहित्यिक पत्रिका सरस्वती का प्रकाशन हुआ तभी से हिन्दी कहानी की विकास-यात्रा प्रारंभ हुई। हिन्दी की पहली मौलिक कहानी किसे माना जाए इस पर विद्वान एकमत नहीं हैं। राजा सिवप्रसाद सितारे हिंद, सैयद इंशा अल्लाखाँ, भारतेंदु हरिश्चंद्र आदि हिन्दी की प्रारंभिक कहानिकारों के बाद प्रेमचंद का प्रवेश हिन्दी कहानी के लिए क्रांतिकारी घटना सिद्ध हुई। सच्चे अर्थों में मुंशी प्रेमचंद को हिन्दी कहानी का जनक और पोषक माना जा सकता है। प्रेमचंद जी ने केवल मनोरंजन के लिए काल्पनिक कहानियों की रचना नहीं की, बल्कि उनकी कहानियों में जीवन के प्रति एक दृष्टिकोण, एक सुझाव और समस्या का समाधान विद्यमान है। प्रेमचंद की भाषा-शैली भी अद्वितीय है।

प्रेमचंद-युग के दूसरे महत्वपूर्ण स्तंभ जयशंकर प्रसाद है। प्रसाद की कहानियों में प्रेम और करुणा का, त्याग और बलिदान का, दार्शनिकता और काव्यात्मकता का, भावुकता और चित्रात्मकता का प्राधान्य है। प्रसाद की कहानियों में सांस्कृतिक इतिहास और परंपरा के स्वर प्रबल हैं। चंद्रधर शर्मा गुलेरी, विश्वंभरनाथ कौशिक, सुदर्शन, पांडेय बेचन शर्मा उग्र, वृन्दावन लाल वर्मा आदि इस काल के पमुख कहानीकार हैं।

प्रेमचन्द युग के बाद हिन्दी कहानी अनेक नवीन धरातलों पर विकसित हुई। हिन्दी कहानी लेखन पर रूस की मार्क्सवादी विचारधारा तथा फ्रायड के यौन सिद्धन्त का भी व्यापक प्रभाव पडा। इस संदर्भ के प्रमुख कहानीकार हैं – जैनेन्द्र। उनकी कहानियों में हृदय जगत की सूक्ष्म मनोवृत्तियों का विश्लेषण है। जैनेन्द्र के समान ही मनोवैज्ञानिक कहानियाँ लिखने वाले महत्वपूर्ण रचनाकार हैं अज्ञेय और इलाचन्द्र जोशी।

प्रगतिवादी विचारधारा से प्रभावित होकर लिखने वाले महत्वपूर्ण कहानीकार हैं यशपाल। इनकी कहानियाँ सामाजिक यथार्थ से जुड़ी हुई हैं। मन्मथनाथ गुप्त, रांगेय राघव, भैरव प्रसाद गुप्त, नागार्जुन, अमृतराय, चन्द्रगुप्त विद्यालंकार, विष्णुप्रभाकर आदि कहानिकारों ने भी सामाजिक सोद्देश्यता को अपनी कहानियों में व्यक्त किया।

सन् 1950 के लगभग नई कहानी नाम से जिस आन्दोलन की सुरुआत हुई उसने शाश्वत मूल्यों की अपेक्षा अनुभव की प्रामाणिकता पर अधिक बल दिया। नए कहानिकारों में मोहन राकेश, कमलेश्वर, निर्मल वर्मा, राजेंद्र यादव, भीष्म साहनी, धर्मवीर भारती और अमरकान्त आदि ने महानगरों के जीवन को अपना कथ्य बनाया।

नई कहानी और उसके बाद के कहानी आन्दोलन में महिला लेखिकाओं ने भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है। मन्नू भण्डारी, कृष्णा सोबती, शिवानी, उषा ,प्रियंवता, ममता कालिया, मेहरुन्निसा परवेज़, चित्रा मुद्गल, नासिरा शर्मा, मृदुला गर्ग, मैत्रेयी पुष्पा आदि अनेक लेखिकाओं ने नारी जीवन को केन्द्र बनाकर समकालीन समाज के जटिल यथार्थ को अभिव्यक्त किया।

नई कहानी के बाद हिन्दी कहानी निरंतर नई दिशाओं में विकसित होती रही है। नई कहानी ने यथार्थ की अभिव्यक्ति और अनुभूति की ईमानदारी पर बहुत बल दिया था। बहुत से कथा आन्दोलन एक विशेष दृष्टि के आग्रह से जीवनगत यथार्थ को अंकित करने में संलग्न रहे। 'अकहानी', 'समान्तर कहानी', 'सचेतन कहानी', 'जनवादी कहानी' – इन सभी कहानी आन्दोलन ने कहानी के विकास में अपनी भूमिका निभाई।

बदलते समय के साथ-साथ समस्यायें भी बदल रही हैं। समाजवाद के अंत तथा भूमंडलीकरण के नाम पर एकध्रुवी होती दुनिया में पूँजीवाद का नया संकट उठे खडा हुआ है। मीडिया की ताकत का बोलबाला है और उसके सामने व्यक्ति-अस्मिता संकटग्रस्त हो रही है। उत्तर आधुनिक समाज की सच्चाइयों ने कहानी के स्थापित ढाँचे में उसके कथ्य और शिल्प में बहुत से परिवर्तन किए। इनके अतिरिक्त स्त्री-विमर्श र दलित-विमर्श के मुद्दे भी जोर-शोर से उठाए गए हैं। कहानियों की क लंबी पंक्ति अपने-अपने दृष्टिबोध के साथ इन सभी स्तिथियों की ओर ध्यान आकृष्ट कर रही है।

आज के विशिष्ट कहानिकारों में बहुत से नाम उल्लेखनीय हैं – उदय प्रकाश, अब्दुल बिस्मिल्लाह, शिवमूर्ति, संजय, संजीव, संजय खाती, सतीश जमाली, धीरेंद्र अस्थाना, स्वयं प्रकाश, अलका सरावगी, गीतांजलि श्री, ओमप्रकाश वाल्मीकि आदि। हिन्दी कहानी आज भी कथ्य और शिल्प के नए प्रतिमान रचते हुए विकास की अनेक दिशाओं में आगे बढ़ रही है।

2.कफन - प्रेमचंद

1. लेखक परिचय

हिन्दी साहित्य में कहानी सम्राट और उपन्यास सम्राट के रूप में प्रेमचंद विख्यात हैं। उनका वास्तविक नाम धनपतराय था. प्रेमचंद की प्रारंभिक शिक्षा उर्दू में हुई। वे नवाबराय के नाम से उर्दू में लिखते थे। प्रेमचंद की पहली कहानी संसार का सबसे अनमोल रत्न 1907 में जमाना पत्रिका में छपी। 1908 में उनका पहला कहानी संग्रह सोजे वतन उर्दू में छपा, जो राष्ट्रीय भावनाओं से पूर्ण होने के कारण जब्त कर लिया गया। इसके बाद वे प्रेमचंद नाम से हिन्दी में कहानियाँ लिखने लगे। प्रेमचंद का रचना-फलक अत्यंत व्यापक है। उन्होंने तीन सौ कहानियाँ, ग्यारह उपन्यास और दो नाटकों की रचना की। उनकी सभी कहानियों का संग्रह मानसरोवर के नाम से आठ भाग में प्रका-त हुआ है।

2. शब्दों का अर्थ

कफन	-	shroud
झोंपडा	-	a hut
अलाव	-	camp, fire
सन्नाटा	-	silence
बेदर्द	-	cruel, hard-hearted
बेवफाई	-	infidelity
कामचोर	-	shrinking from work
चिलम	-	the part of a hubble-bubble which contains the fire and tobacco
मज़दूरी	-	compulsion
अनाज	-	grain
कसम	-	oath
चीथडा	-	rag, tatters
गम	-	sorrow, anxiety
फसल	-	harvest
खानदान	-	family, dynasty
आलू	-	potato
छीलना	-	to peel, to take off the skin
कोठरी	-	small room
बदन	-	the body
सुध	-	consciousness
अचरज	-	surprise
मंडली	-	association
सब्र	-	patience
अंगार	-	an ember , burnning char coal
बारात	-	a marriage party
अजगर	-	a python
फिक्र	-	worry
बाँस	-	a bamboo
सूती	-	cotton
असमजस	-	a dilemma, doubt
गौरव	-	prestige, significance
खासियत	-	speciality

3. सारांश

द्वार पर घीसू और माधव – पिता और पुत्र – अलाव जलाकर औरों के खेत से चुराये आलू भून रहे हैं। भीतर माधव की पत्नी बुधिया प्रसव-पीडा से तडप रही थी। लेकिन दोनों में से कोई भी उठकर उसकी सहायता के लिए नहीं जाता क्योंकि उसे डर है कि दूसरा कहीं आलुओं का ज्यादा भाग न खा जाए। वे दोनों कामचोर हैं और सारे गाँव में बदनाम है। वे चमार जाति के हैं। लोगों की गालियाँ वे खाते हैं, मार भी खाते हैं, फिर भी इसका ज़रा भी असर उन पर पडता नहीं। बहुत दिन पहले ही घीसू की पत्नी की मृत्यु हो गई थी। माधव की ---दी पिछले साल ही हुई थी। नई बहू के आने के साथ घर पर व्यवस्था आ गई। वे तो और अधिक आरामतलब हो गए और वही औरत आज प्रसव-वेदना से मर रही थी और ये दोनों शायद इसी इन्तजार में थे कि वह मर जाए, तो आराम से सोएँ

घीसू को उस समय ठाकूर की बारात याद आई, जिसमें बीस साल पहले वह गया था। उस दावत में उसे जो तृप्ति मिली थी, वह उसके जीवन में एक याद रखने लायक बात थी और आज भी उसकी याद ताज़ी थी। उसने पूरी तृप्ति से भरपेट पूरी-कचौरी, रायता, मिठाई खायी थी। माधव केवल उसकी कलपना करते हुए कहता है कि घीसू की जगह वह होता तो पूरी पचास पूरियाँ खा जाता। इस वक्त जिसके सामने बुधिया की कराहें भी उनके कानों तक नहीं पहूँचतीं।

आलू खाकर दोनों ने पानी पिया और वहीं अजगर की तरह पडे सो रहे और अंदर में बुधिया अभी तक कराह रही थी।सबेरे माधव ने देखा कि बुधिया और पेट का बच्चा मर चुकी हैं। उसके मूँह पर मखियाँ भिनक रही थीं। माधव और घीसू दोनों ज़ोर-ज़ोर से छाती पीटने लगे। आस पडोस के लोग आकर उन्हें सांत्वना देने लगे। अब कफन और लकड़ी की फिक्र करने का समय है। उनके हाथों कुछ भी नहीं है। वे ज़मीन्दार के पास गए। ज़मीन्दार को उन दोनों के प्रति घृणा है। घीसू भरी आँखों से बताने लगा कि रात भर बहु तडपती थी। दवा वे उसे पिलाते थे, सिरहाने बैठकर सभी मानों में उसकी शुश्रूषा करते थे। फिर भी वह मर गई। अब उसकी अंत्योष्ठी करना है।

सेठजी ने नाराज़गी में ही दो रूपए उन्हें दिए। दूसरे लोगों से भी उन दोनों ने पैसा माँगा। उन्हें पाँच रूपए मिले। अनाज और लकडी भी मिली। फिर कफन खरीदने के लिए निकले। वे सस्ता हल्का कफन खरीदना चाहते हैं क्योंकि कफन लाश के साथ ही जल जाता है। कफन की तलाश करते शाम हो गए। एक मधुशाला के सामने अनजाने वे आ गए। बिना सोचविचार के उसके अंदर चल गए।

दोनों मज़े से पीने लगे। नशे में घीसू पूछा "कफन के बारे में लोगों को क्या जवाब देंगे?" "बताना कमर से खिसक गए है। फिर वहीं लोग रूपए देंगे।" बहू के बारे में तमाशा कर नशे से वे खड़े हो गए और गाने लगे। मस्ती में नाचते, उछलते अंत में वहीं बेहोश गिर गए। व्यक्तिगत यथार्थ और सामाजिक यथार्थ समान रूप में इसमें प्रस्तुत है। अथवा सभी मानों में यह कहानी प्रेमचंद की प्रतिनिधि कहानी बन जाती है।

4. प्रश्न

1. घीसू और माधव का चरित्रचित्रण कीजिए।
2. बीस सील पहले की बारात की कहानी घीसू ने किस प्रकार कहा और वह सुनकर माधव की प्रतिक्रिया क्या थी?
3. बुधिया की मृत्यु कैसी हुई?
4. घीसू और माधव के मधुशाला के अनुभव का चित्रण कीजिए।
5. 'कफन' कहानी की कथा संक्षेप में लिखकर उसकी विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

3. वापसी – उषा प्रियंवदा

1. लेखक परिचय

उषा प्रियंवदा की कहानियों में नारी मन का यथार्थ वर्णन है। आप का साहित्य सृजन क्षेत्र अत्यंत विस्तृत है। 'फिर वसंत आया', 'जिंदगी और गुलाब के फूल', 'कितना बडा झूठ', 'कोई एक दूसरा' और 'मेरी प्रिय कहानियाँ' उनके कहानी संग्रह हैं। आपके कथा लेखन में भारतीय और विदेशी परिवेश के अनुभवों को एक साथ उठाया गया है। उन्होंने परिवार में स्त्री के संबन्धों और उसके मन में उठते सवालों का सूक्ष्म चित्रण किया है। साठोत्तर युग की स्त्री का आत्मविश्वास भरा रूप उनकी कहानियों का केन्द्रबिन्दु है। सभ्य समाज में परिवर्तित होते जीवन-मूल्यों को उन्होंने बारीकी से विश्लेषित किया है।

2. शब्दों का अर्थ

अगहन	-	the ninth month of the Hindu calendar
हौसला	-	courage, ambition
बिछोह	-	बिछुड़ना
सेंकना	-	to warm, to roast
कमर	-	waist
होश	-	sense
चम्मच	-	spoon
मिजाज	-	nature
शिकायत	-	complaint
हिसाब	-	account, calculation
सिटपिटाना	-	to be embarrassed
सकपकाना	-	to be confounded

3. सारांश

गजाधर बाबू पैंतीस साल की नौकरी के बाद रिटायर होने पर सरकारी क्वार्टर खाली कर रहा था। घर जाने की खुशी में भी गजाधर बाबू ने एक विशाद का अनुभव किया जैसे क परिचित, सहज संसार से उनका नाता टूट रहा था। रेलवे क्वार्टर का वह कमरा, जिनका सामान हट जाने से वह कुरूप और नग्न लग रहा था। पर पत्नी, बाल-बच्चों के साथ रहने की कल्पना में यह विछोह एक दुर्बल लहर की तरह उठकर विलीन हो गया। संसार की दृष्टि में उनका जीवन सफल कहा जा सकता था। उन्होंने शहर में एक मकान बनवा लिया था, बडे लड़के अमर और लड़की कान्ति की शादियाँ कर दी थीं, दो बच्चे ऊँची कक्षाओं में पढ़ रहे थे। गजाधरबाबू स्वभाव से बहुत स्नेही व्यक्ति थे और स्नेह के आकांक्षी भी।

एक रविवार को गजाधर बाबू अपने घर पहूँचे। घर के भीतर से हाँसी मज़ाक की आवाज़ आ रही थी। बच्चे नाश्ता कर रहे थे। पत्नी पूजा कर रही थी। गजाधर बाबू मुस्कुराते हुए, बिना खाँसे अंदर चले गए। उन्होंने देखा कि नरेन्द्र कमर पर हाथ रखे शायद गत रात्रि की फिल्म में देखे गए किसी नृत्य की नकल कर रहा था। सब उसका अभिनय देखकर ठहाका मार रहे थे। उन्होंने चाहा था कि वह भी इस मनोविनोद में भाग लेते, पर उनके आते ही जैसे सब कुंठित हो चुप हो गए, उससे उनके मन में थोडी सी खिन्नता उपज आई। एक एक करके

सब वहाँ से खिसक जाने लगे। केवल छोटी लड़की बसन्ती ही कमर में रह गई। बसन्ती से बोले, "बिटो, थोडी चाय बनावो।" बसन्ती ने पिताजी को फीकी चाय बना दी। इतने में पत्नी पूजागृह से आती हुई दिखाई दी। माँ को आते देखकर बसन्ती भी वहाँ से कतराकर चली गई। बाबूजी की धर्मपत्नी आकर चौके में बैठ गई और गृहस्थी का जंजाल उठा रखा।

घरवालों के बर्ताव से दू:खी गजाधर बाबू को अपना क्वार्टर याद आ गया। वह सुखमय जीवन अब उन्हें एक खोई निधि – सा प्रतीत हुआ। उन्होंने घर वालों से जो कुछ चाहा, उसमें से उन्हें एक बूँद भी न मिली। घर का प्रत्येक व्यक्ति स्वयं अपना स्वामी बना हुआ था। जब जो कुछ चाहता, करता जहाँ जी चाहता, चला जाता। छोटी लड़की बसन्ती शाम को देर तक पड़ोस के लड़कों में मिल जुल कर रही थी। जब पिता उसपर नियन्त्रण रखा, तो वह रुष्ठ गई। पिता से बोलना तक छोड दिया। बहू अप्रसन्न रहती, क्योंकि ससुर ने उससे रसोई में हाथ बँटाने को कहा। बडे लड़के अमर की शिकायतें बहुत थीं। कोई मित्र मेहमान आए तो वहीं बैठने की जगह नहीं। बाबूजी की धर्मपत्नी भी पति को तंग करने में पीछे नहीं रही। गजाधर बाबू ने देखा कि गृहस्वामी होने पर भी घर में उनका कुछ अधिकार नहीं हैं। घरवाले उन्हें केवल धन कमाने के यंत्र से बढ़कर कुछ नहीं समझते। उस दिन से उन्होंने घर के मामलों में कुछ बोलना सुनना छोड दिया। नरेन्द्र रूपये माँगने गया, तो बिना कारण पूछे दे दिये। बसन्ती काफी रात हो जाने के बाद भी पडोस में रहीं, तो भी उन्होंने कुछ नहीं कहा था। इस प्रकार किसी कार्य में हस्तक्षेप न करने के बाद भी उनका अस्तित्व उस वातावरण का भाग न बन सका। उनकी उपस्थिति उस घर में सी असंगत लगने लगी, जैसे सजी हुई बैठक में उनकी चारपाई। उन्हें सबसे बडा दु:ख यह था कि उनकी पत्नी ने भी उनमें कुछ परिवर्तन लक्ष्य न किया वे मन ही मन कितना भार हो रहे हैं। इससे वह अनजान ही बनी रही। गजाधर अब उसके जीवन के केन्द्र नहीं। इस प्रकार जीवन की वास्तविकता की चट्टान से टकरा कर बाबूजी की सारी आकांक्षायें चकनाचूर हो जाती है।

गजाधर बाबू चीनी मिल में नौकरी के बहाने लौटने का निर्णय लेते हैं। वे पत्नी से साथ चलने के लिए पूछते हैं। शायद उन्हें पत्नी की आत्मीयता पर अब भी विश्वास है। पत्नी अपनी गृहस्थी, अपनी रसोई और बच्चों के बिना जीवन की कल्पना ही नहीं कर सकती। वह वहीं रह जाती है और गजाधर बाबू जिस तरह टिन का बक्स और बिस्तर लिए घर आए थे उसी तरह रिक्शे पर बैठ वापस चल पड़ते हैं। जाते-जाते वे केवल एक बार उस छूटते परिवार को फिर से देखते हैं लेकिन इस बार उनकी पीड़ा दूसरी हैं। अपनों के बीच पराये और अजनबी होने की पीड़ा।

गजाधर बाबू के जाने के बाद सब अंदर लौट आए और खुशी के साथ अपने-अपने काम में मग्न लगे।

गजाधर बाबू की जीवन स्थिति हमारे परिवारों में बूढ़े-बुजुर्गों की उपेक्षा की अनेक अकथ कहानियों का सार है। अपनी भाषा और सधे हुए शिल्प की दृष्टि से भी यह कहानी महत्वपूर्ण है। गजाधर बाबू का चरित्र कहानी की प्राण शक्ति है।

4. **प्रश्न**

1. घर में गजाधर बाबू का स्वागत किस प्रकार हुआ?
2. 'वापसी' कहानी का संदेश क्या है?
3. गजाधर बाबू का चरित्र चित्रण कीजिए
4. 'वापसी' कहानी का सारांश लिखकर उससकी विशेषताओं की व्याख्या कीजिए

4. चीफ की दावत - भीष्म साहनी

1. लेखक परिचय

समकालीन हिन्दी कहानी में भीष्मसाहनी अपने समय और समाज को प्रगतिशील दृष्टि से प्रस्तुत करने वाले रचनाकार हैं। विभाजन की त्रासती उनके कथा-साहित्य का मार्मिक पड़ाव है। उनकी कहानियों में तत्कालीन जीवन स्थितियों के प्रति असंतोष के साथ साथ परिवर्तनशील समाज का सपना भी है। अभिव्यक्ति के स्तर पर ये कहानियाँ सादगी भरी सोद्देश्य कला का उदाहरण हैं।

2. शब्दों का अर्थ

दावत	-	feast
पसीना	-	sweet
फुर्सत	-	spare time
फेहरिस्त	-	सूची
पलंग	-	bed
सुझाव	-	proposal
खर्राट लेना	-	snoring
बैठक	-	sitting room
गुसलखाना	-	bath room
खडाऊ	-	लकड़ी से बनी पैर की चप्पल
तरक्की	-	promotion

3. सारांश

मिस्टर शामनाथ के घर में चीफ की दावत के लिए जोर-शोर से तैयारी चल रही है। उनके मन में अपने चीफ को खुश करके नौकरी में तरक्की पाने की इच्छा है। वे स्वयं एक-एक चीज़ देख-परख रहे हैं। कुर्सियाँ, मेज़, तिपाइयाँ, नैपकिन, फूल सब बरामदे में पहूँच गए। ड्रिंक का इंतजाम बैठक में कर दिया था। घर का फालतू सामान अलमारियों के पीछे और पलंगों के नीचे छुपाया जाने लगा। पत्नी और शामनाथ दोनों मिलकर कठिन परिश्रम करके सब चीज़ें ठीकठाक रखते हैं। किन्तु अब प्रश्न रहा बूढी माँ का!

शामनाथ चाहता था कि बूढी माँ साहब के सामने दिखाई न दे। अगर चीफ के सामने पडी तो सारी कोशिशों पर पानी फेर जाएगा। गंवारू माँ को नये फैशन के बारे में कोई परिचय नहीं है। इसलिए वह माँ को कुछ निर्देश देता है "माँ आज तुम खाना जल्दी खा देना" तब माँ ने कहा "आज मुझे खाना नहीं खाना है बेटा, तुम जानते तो हो, मांस मछली बने तो मैं कुछ नहीं खाती।" आगे वह कहता है "माँ आज जल्दी सो नहीं जाना।

तुम्हारे खर्राटों की आवाज़ दूर तक जाती है।" तब माँ लज्जित सी आवाज़ में बोली "क्या करूँ बेटा, मेरे बस की बात नहीं है। जब से बीमारी से उठी हूँ, नाक से साँस नहीं ले सकती।" खड़ाऊँ पहनकर चलना बूढ़े बुढ़ियों की आदत है। बेटे ने वह भी रोका। वह फिर माँ से चूडियाँ पहनने के लिए कहता है। माँ को बीती बात याद आयी है। कंगन सब बेटे की पढ़ाई में खर्च हो गया था। इस पर बेटे के रूठे उत्तर में माँ कहती है कि मेरी जीभ जल जाय! वहाँ माँ को कहीं छिपाना चाहता है। बरामदे में या कोठरी में बिठाना चाहता है। बेटे के निर्देशों को सुनकर माँ विवश हो कर कहती है कि तुम जो कुछ बोलते हो वही मैं करूँगी।

चीफ अपने परिवार के साथ आते हैं। शामनाथ संतुष्ट है कि बॉस को उसका इंतजाम और बॉस की पत्नी को उनके घर के परदे पसंद आए हैं। नशे और सरूर भरे माहौल में एक बार फिर अटपटापन पैदा हो जाता है। जब शामनाथ के व्यवस्था के विपरीत माँ अचानक अस्त-व्यस्त हालत में बॉस और मेहमानों के सामने पड जाती हैं। उस समय शामनाथ की प्रतिक्रिया अत्यंन्त अमानवीय हो जाती है। लेकिन बॉस की प्रतिक्रिया देखकर यह समीकरण तुरंत बदल जाते हैं। विदेशी बॉस के लिए शामनाथ की ग्रामीण-अनपढ़ माँ दिलचस्पी का विषय है और शामनाथ घर के सामान की ही तरह माँ की भी नुमाइश करने से नहीं चूकते। बॉस की फरमाइश पर बेटा कभी माँ को गाने का तो कभी फुलकारी बनाने का आदेश कर रहा है। माँ उनकी तरक्की की सीढ़ी बन सकती हैं यह सोचकर ही मिस्टर शामनाथ झूम उठते हैं।

आधी रात के समय सभी मेहमान भोजन करके एक-एक करके चले गए। पुत्र का मनोभाव समझनेवाली माँ ने पुत्र से कहा कि मुझे हरिद्वार भेज दो। जीवन में बाकी समय भगवान का नाम लूँगी। तब शामनाथ ने कहा कि साहब को खुश करने के लिए मेरेलिए फुलकारी बनाओ। अगर वे खुश होंगे तो मेरी तरक्की होगी। अपने पुत्र के भविष्य के लिए माँ ने हरिद्वार जाने का विचार छोड़ दिया। माँ दिल ही दिल में बेटे के उज्ज्वल भविष्य की कल्पना करने लगी।

4. प्रश्न

1. माँ ने अपने बेटे शामनाथ की लाज कैसे रखी?
2. 'चीफ की दावत' कहानी में माँ की ममता औ पुत्र की स्वार्थता का कौन-सा चित्र मिलता है?
3. 'चीप की दावत' कहानी का सारांश लिखकर उसकी विशेषताओं की व्याखा कीजिए।

5. उमस – ममता कालिया

1. लेखक परिचय

हिन्दी कथा-साहित्य को समृद्ध करने वाली लेखिकाओं में ममता कालिया का महत्वपूर्ण स्थान है। आपके लेखन का मूल बिंदू है नारी मनोविज्ञान और सामाजिक विसंगतियों का प्रतिरोध। परंपरागत जीवन दृष्टि के प्रति नकार का भाव, रूढ़िगत समाज मूल्यों का बहिष्कार और नये खुले जीवन-बोध के प्रति उत्साह उनकी कहानियों में साफ झलकता है। ममता कालिया ने नारी जीवन के विविध पक्षों की आधुनिक स्थितियों और संदर्भों में रखकर प्रस्तुत किया है। घर–परिवार के चारदीवारी के बाहर मध्यवर्गीय शिक्षित स्त्री की आशा – आकांक्षाओं, संघर्ष और सपनों का संवेदनशील मार्मिक अंकन उनकी कहानियों का पहचान है।

2. शब्दों का अर्थ

रफ्तार	-	speed
रद्दोबदल	-	change, alteration
हरगिज	-	at any time, ever, on any account
अंदाज़	-	a guess, gesture
जेहन	-	intellect
निरंतरता	-	continuity
झपकी	-	nap, doze
तानाशाह	-	a dictator
तारतम्य	-	क्रम
ठिठक	-	uneasiness, stopping suddenly
अफसोस	-	sorrow, regret
मुमकिन	-	possible, feasible
शक्ल	-	shape, appearance
जड़ता	-	चेतनाहीन
तकिए	-	pillow, cushion
चादर	-	a bed-sheet
कब्र	-	a grave

3. सारांश

पति विनोद की दृटि में पत्नी रानी एक गोल व्यक्तित्व बनती जा रही थी। शादी की शुरू में रानी और विनोद दोनों हमुउम्र, हमपेश और हमखयाल थे लेकिन बाद में सब बिगड़ गया है। विनोद एक तेज-तर्रार आदमी था जिसे हर वक्त रफ्तर पसंद थी, प्यार, व्यापार और व्यवहार में। किन्तु रानी की इच्छा होती वह एक शव की तरह निस्पंद पड जाए। रानी की जडता शायद उसके लिए एक स्वाभाविक परिणति थी।

पति अपने मित्रों को दिन-ब-दिन बदलता है। रानी ऐसी नहीं है। वह काम तो करती है। लेकिन अपने साहचर्य को बदल कर मानने में उसे देर लगता है। इसलिए पति के नवीन मित्रों को नवीन रूप में स्वीकारने को वह असमर्थ होती है। जल्दी बदलकर सोचने और आदत्त एकदम बदलने को वह सक्षम नहीं है। दोपहर को ऊँधने लगी तो सास से परिहास करती है। पति उसे अपने अनुसार बदलने को प्रेरित करता है। लेकिन रानी उसे निभा नहीं पाती है। पति पत्नी के बीच अलगाव उत्पन्न हुआ। रानी एक हद तक चेतनाहीन हो गई। सास तो बार-बार उसे परिहास करती है जल्दी काम करने को कहती है और छोटा दिखाती है।

सास सत्संग में जाने की तैयारी जल्दी से कर रही है। आज रानी भी सत्संग में जाना चाहती है। लेकिन सास उसे जाने नहीं देती है। यह रानी को मानना पड़ता है। अपनी मर्जी के अनुसार कुछ भी करने नहीं देती है। अथवा रानी केवल आज्ञानुवर्ती होने को अभिशप्त है। सास उसे हाँटती भी है। रानी को काम करने की निश्चित रीति होती है। वह काम करती भी है किन्तु धीरे-धीरे। उस घर में उसका कोई माननेवाला नहीं है। उसके सही ठंग से कोई नहीं समझता है।

रानी का आचरण दूसरों को बोझ-सा लगता है। पति का अनुरोध है कि कोई नौकर आए तो सब ठीकठाक से चलेगा। उसके पुत्र पवन आकर चाय बनाने को कहता है। स्वस्थ नहीं होने पर भी समय लेकर रानी चाय बना लाती है। तबतक पवन गए हुए थे। पवन वापस आकर चाय माँगता है। तब सास ने कहा कि खाने का वक्त आ गया है तो खाना चाहिए। अब तक खाना न बनाने का आरोप भी हुआ।

दूरदर्शन पर सब क्रिकेट देख रहे थे। रानी भी रसोई और बैठक के बीच काम करती और टी.वी देखती है। एक षॉट खेला गया तो रानी ने कहा कि वह बल्लेबाज कपिलदेव है। पवन का कहना है कि रानी का समझ है। ऐसा षॉट खेलने वाला वेंगसरकार है। रानी का कहना है कि दोनों का रूप लगभग समान है। पवन ने कहा कि रानी का कहना खेल देखने की उसकी रुची नष्ट कर दी गई है। रानी रसोई में लौट गई। वहाँ बहुत से काम पडा है। वह रसोई से बगल के कमरे में जाती है और बिस्तर पर लेटे-लेटे उसे लगा यह बिस्तर नहीं कब्र है जिसमें वह पड़ी है, निस्पंद, निश्चेष्ट। उसमें न किसी की डाँट है और यहाँ वह पूरी तरह स्वतंत्र है।

ममता कालिया की कहानी 'उमस' परिवार के बँधे - बँधाये ढाँचे में एक स्त्री की ऊब और घुटन भरी जिन्दगी का शब्द चित्र है। उसकी सास, उसके पति और उसके पुत्र – सबको उससे अलग अलग शिकायतें हैं। हर रोज़ कुछ न कुछ सा होता ही रहता है जिसमें रानी खुद को फँसा हुआ महसूस करती है। स्त्री के 'स्व' को इस तरह खत्म करना, हर क्षण की मानसिक पीड़ा एक प्रकार की हिंसा ही है। ममता कालिया सादगी भरे अंदाज में इस पारिवारिक हिंसा को उजागर करती हैं।

4. **प्रश्न**

1) रानी का आचरण दूसरों को क्यों बोझ-सा लगता है?
2) 'उमस' कहानी का सारांश लिखकर कहानी की विवेचना कीजिए?
3) रानी अपने आपको अकेली और असहाय क्यों समझती है?

6.अपराध - उदयप्रकाश

1. लेखक परिचय

उदयप्रकाश हिन्दी के उन कहानिकारों से एक हैं जिन्होंने पिछले कुछ वर्षों में अपनी अलग पहचान बनाई है। साहित्यकारों के रूप में उदयप्रकाश की कविताओं और कहानियों को राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय पहचान मिली है। आपकी कहानियाँ सरल नहीं, अत्यंत जटिल हैं। साहित्य को निश्चित स्थापित ढ़ाँचों से अलग कर उदयप्रकाश ने अपनी रचनात्मकता का प्रमाण दिया है। वे निरंतर सृजनशील हैं।

2. शब्दों का अर्थ

अपाहिज	-	crippled, disabled
तैराक	-	swimmer
उत्तरदायित्व	-	जिम्मेदारी
अंगार	-	an ember, burning char coal
संवेग	-	momentum
हथेली	-	palm of hand
झटक	-	to give a jerk, to snatch
जिक्र	-	mention, narration
ग्लानि	-	खेद, पचाताप

3. सारांश

मेरे भाई मुझसे छह साल बडे थे। मैं इसीलिए सबसे छोटा था और मुझे अकेलापन महसूस हुआ। सब खेलते वक्त मैं उनके पीछे पडता हूँ। मेरे भाई बचपन से विगलांग थे। उनके एक पैर को पोलियो हो गया था। लेकिन वे देवताओं की तरह बहुत सुन्दर थे। वे अच्छे तैराक थे। उनके हाथ के पंजों की लड़ाई में कोई नहीं हरा सकता था। घूँसे से नारियल और ईंदें तोड देते थे। जबकि मैं दुबला पतला था। उनके बहुत सारे दोस्त थे। इन्हीं कारणों से मुझे अपने भाई से ईर्ष्या होती थी। किन्तु वे मुझे प्यार करते थे। सभी अर्थों में वे मेरे संरक्षक थे।

मैं छोटा होने के कारण अकेला पड जाता था। मेरे भाई तो तब आकर मेरी मदद करते थे। जोडी और पाली वाले की खेलों में वे मुझे अपनी पाली में शामिल कर लेते थे। अक्सर भाई मेरी वजह से ही हारते। फिर भी वे मुझसे कभी कुछ नहीं करते थे। मैं उनकी जिम्मेदारी था और वह उसे निभाना चाहते थे। जहाँ तक मुझे याद है, उन्होंने कभी मुझे नहीं मारा।

भाई और मुझसे संबन्धित एक महत्वपूर्ण घटना है जो स्मृति में अंगारे की तरह जीवन भर मेरा साथ छोडती नहीं रहती है। उस दिन बारिश हो चुकी थी। शाम को गर्मी आ गई थी। इसलिए सभी लडके खड़ब्बल खेल रहे थे। इस खेल को ताकत और संवेग की ज़रूरत है जो मुझमें नहीं था। यह एक ऐसा खेल था, जिसमें कोई पाली नहीं होती, कोई किसी का जोडीदार नहीं होता। हर कोई अपनी अकेली क्षमता से लडता है। भाई उस केल

में डूब गए थे। उन्होंने एक बार भी मेरी और नहीं देखा। वे मुझे पूरी तरह भूल चुके थे। इस तिरस्कार भाव के कारण मैं निराश था और मुझे रोना आ रहा था भाई के प्रति मन में कठोर प्रतिकार पैदा हो रहा था। मैं ईर्षा, आत्महीनता, उपेक्षा और नगण्यता की आँच में झुलस रहा था। मैं अपने खड़ब्बल को एक पत्थर पर पटक रहा था जो अचानक वह मेरे माथे पर आ पटका। माथा फूट गया और खून बहने लगा। मैं चीखा तो भाई मेरी ओर दौडे और खेल बीच में रुक गया। भाई घबरा गये थे और पूछा क्या हुआ? इससे मेरा गुस्सा नहीं मिटा था और उनको अपनी उपेक्षा का दंड देना चाहता था। मैं ने भाई को झटक दिय और घर की ओर भागा। भाई डर गये थे और दौडकर मुझे मनाना चाहते थे।

खून में भीगे हुए मैं घर पहूँचा। मुझे देखकर माँ डर गयीं और पिताजी घबराए हुए। मैं ने रोते हुए माँ को बताया कि मुझे भाई ने खड़ब्बल से मारा है। भाई बार-बार कहते रहे कि मैं ने इसे नहीं मारा, लेकिन पिताजी उन्हें पीटे जा रहे थे। भाई सच बोल रहे थे, लेकिन उन्हें सज़ा मिल रही थी। वे मेरी ओर देख रहे थे जैसे वे मुझसे याचना कर रहे हों कि मैं सच बोल दूँ। सच्चाई बताते तो मुझे भी मार खाने की डर से मैं तो चुप रहा।

यह घटना वर्षों पुरानी है। फिर भी उस का वह याचनामय चेहरा मेरी आँखों में अब भी सजीव है। मैं अपने इस अपराध के लिए क्षमा माँगना चाहता हूँ। इस अपराध की सज़ा पाना चाहता हूँ। लेकिन अब तो माँ और पिताजी नहीं हैं। भाई भी इस घटना पूरी तरह भूल चुके थे। अब इस अपराध के लिए मुझे क्षमा कौन कर सकता है? मेरी दुरवस्था अब और भी संकीर्ण हुई है कि इस अपराध बोध से मेरी मुक्ति अब संभव हो चुकी है।

4. प्रश्न

(1) 'अपराध' कहानी का संदेश क्या है?

(2) बडे भाई का चरित्र-चित्रण कीजिए?

(3) लेखक को भाई से ईर्ष्या होने का कारण क्या है?

(4) लेखक भाई से कैसे बदला देता है?

(5) लेखक से किए हुए अपराध से मुक्ति कैसे असंभव हो चुकी है?

(6) 'अपराध' कहानी का सारांश लिखकर उसकी विशेषताओं पर प्रकाश डालिए?